बाल भारती

भाग 2

कक्षा दो के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

संयुक्ता लूदरा
सत्येंद्र वर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मई 1988 : बैसाख 1910

प्रथम संशोधित संस्करण
मार्च 1997 : फाल्गुन 1918

द्वितीय संशोधित संस्करण
जनवरी 2003 : माघ 1924

PD 450T MB

ISBN 81-7450-100-2

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2003

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	24 परगना 743 179

प्रकाशन सहयोग

संपादन : मरियम बारा

उत्पादन : विनोद देवीकर
मुकेश कुमार गौड़

आवरण : निधि वधवा

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित तथा राज प्रिंटिंग वर्क्स, 44, चांदनी चौक, दिल्ली-110 006 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

भाषा मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए सबसे उपयोगी साधन है, इसलिए भाषा सीखना व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है। यह एक सहज प्रक्रिया है। भाषा की शिक्षा के बिना मनुष्य का सामाजिक और बौद्धिक विकास पूर्ण नहीं होगा। भाषा का प्रवाह व्यक्ति और समाज में निरंतर चलता रहता है। भाषा-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस योग्य बना देना है, जिससे वे भाषा के प्रवाह में स्वयं तैर सकें।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्य-सामग्री का निर्माण एक सतत प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत परिषद् ने नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की जो ृंखला प्रारंभ की थी, उसमें बाल भारती भाग 2 प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा हिंदी पढ़ाने के लिए निर्मित पुस्तक की दूसरी कड़ी है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण वर्ष 1988 में प्रकाशित किया गया था। सन् 2000 में परिषद् द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित की गई और उसके आधार पर पाठ्यक्रमों का निर्माण किया गया । इस पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है - बस्ते के बोझ को कम करना, पाठ्य-सामग्री को अद्यतन बनाना और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना। परिषद् ने पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को आधार बनाकर विभिन्न-विषयों में नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा अन्य पाठ्य-सामग्री में संशोधन, परिवर्धन का कार्य आरंभ किया है।

इसी आधार पर बाल भारती भाग 2 में यथा-आवश्यक संशोधन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक को संशोधित करते समय ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम के बोझ को कम किया जा सके तथा पाठ्य-सामग्री को नई पाठ्यचर्या के परिप्रेक्ष्य में अद्यतन बनाया जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य-सामग्री के माध्यम से प्रयास किया गया है कि बच्चों में भाषा सीखने के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके, साथ ही अधिगम प्रक्रिया आनंददायी बन सके और भाषा कौशलों का सम्यक् विकास हो सके।

इस पुस्तक के निर्माण का मुख्य उद्देश्य कक्षा 2 में पढ़ने वाले बच्चों में संयुक्ताक्षरों से बनने वाले शब्दों, उनसे निर्मित वाक्यों तथा ऐसे वाक्यों से निर्मित सरल पठन-सामग्री को पढ़ने का कौशल विकसित करना है। साहित्य की विविध-विधाओं के कुछ सरल रूपों - कविता, कहानी, पहेली, वर्णन और निबंध आदि के माध्यम से इस पुस्तक में सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। यह भी ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थियों में पठित सामग्री के आधार पर चिंतन की योग्यता भी विकसित हो सके।

जिन विचारों एवं मानव मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है, उनमें कुछ इस प्रकार हैं - देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, सामाजिक सहयोग, पर्यावरण संरक्षण, पारस्परिक सद्भाव, समूह के प्रति उत्तरदायित्व की भावना, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान, सच्चाई, सफ़ाई, अनुशासन, समय-पालन, खेल भावना, साहस, श्रम का महत्त्व, स्वास्थ्य, सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव आदि।

आशा है कि विषय, विधा तथा प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से बाल भारती भाग 2 के इस नवीन संशोधित संस्करण का विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों और भाषाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत

नई दिल्ली — *निदेशक*

जनवरी 2003 — राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51क

मूल कर्त्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

शिक्षकों के लिए

बाल भारती पुस्तकमाला की यह दूसरी पुस्तक है। पहली पुस्तक समाप्त करते-करते बच्चों में सभी स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्ताक्षर तथा उनसे बनने वाले कई सौ शब्द पढ़ने की योग्यता विकसित हो जाती है। कुछ संयुक्त व्यंजनों का ज्ञान दृश्य शब्दों के रूप में पहली पुस्तक में दिया जा चुका है। इस पुस्तक में विशेष रूप से संयुक्त व्यंजनों को सिखाने का प्रयत्न किया गया है। इससे बच्चों में हिंदी भाषा के कई हज़ार शब्दों को पढ़ने की योग्यता का विकास हो पाएगा। जहाँ-कहीं नई लिपि-संकेत दिए गए हैं, वहाँ उनका कई बार प्रयोग करके बच्चों का ज्ञान दृढ़ करने का प्रयास किया गया है। बाद में भी उनकी यथास्थान आवृत्ति की गई है। नए शब्दों और वाक्यांशों की भी इसी प्रकार आवृत्ति की गई है, जिससे बच्चों के पढ़ने की गति तीव्र हो सके। वास्तव में यह पाठ्यपुस्तक विभिन्न भाषिक कौशलों को सिखाने का साधन है।

पुस्तक पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

दूसरी कक्षा तक आते-आते बच्चों की स्वाभाविक झिझक काफ़ी कम हो जाती है और वे पाठशाला के परिवेश से पूर्णतया परिचित हो जाते हैं। उनमें कुछ समय तक एक स्थान पर बैठने और अध्यापक अथवा किसी साथी द्वारा कही गई बात को धैर्यपूर्वक सुनने की योग्यता भी आ जाती है। शिक्षक को चाहिए कि बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने की आदत का सायास विकास करें, साथ ही उन्हें लगातार सक्रिय बनाए रखें।

बालक/बालिकाएँ जाने पहचाने शब्दों का वाक्यों में सप्रवाह प्रयोग कर सकें, वे छोटी-छोटी कविताएँ, कहानियाँ सुना सकें तथा संवाद आदि में सक्रिय भाग ले सकें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। पाठों के अतिरिक्त अपने परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं पर वे खुलकर चर्चा कर सकें, इसके लिए प्रश्न पूछकर उन्हें सक्रिय रखें। उदाहरण के लिए परिवेश में कोई त्योहार, विवाह अथवा अन्य कोई पारिवारिक आयोजन, अनाज बोना और फसल काटना, वर्षा होना, किसी व्यक्ति का गाँव अथवा शहर में आना आदि प्रतिदिन के स्वाभाविक विषयों पर बिना किसी झिझक के बातचीत करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए।

दूसरी कक्षा तक आते-आते बोलियों का प्रभाव कुछ कम हो जाता है और बच्चों का झुकाव हिंदी भाषा के परिनिष्ठित रूप की ओर होने लगता है। जिन बच्चों में अभी भी हिंदी में बात करने अथवा प्रश्न का उत्तर देते समय अपनी बोली का प्रयोग करने की प्रवृत्ति हो, उनकी ओर विशेष ध्यान दें। समय-समय पर उनका ध्यान भाषा के मानक और परिनिष्ठित रूप की ओर दिलाएँ, जिससे वे बोलियों के प्रभाव से अधिकाधिक मुक्त हो सकें।

बालक/बालिकाओं को साहित्य की विविध विधाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से पुस्तक में कविता, कहानी, वर्णन, वार्तालाप आदि विधाओं में पाठ प्रस्तुत किए गए हैं। एक पाठ में पहेलियाँ भी दी गई हैं। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे अन्य विषयों की पठन-सामग्री को पढ़ने की योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे।

आदर्श पाठ योजना

भाषायी योग्यताओं के विकास में बच्चों को सहायता देने के लिए क्रमिक सोपानों में पाठों की सुव्यवस्थित योजना बनाना बहुत आवश्यक है। पाठ-योजना में वे सभी पहलू सम्मिलित होने चाहिए, जो बच्चों को पढ़ना सीखने में गति तथा क्षमता विकसित करने में सहायता देने के उद्देश्य से बनाए गए हों। ऐसी पाठ-योजना के सोपान इस प्रकार हो सकते हैं :

1. **पाठ की तैयारी : पाठ-योजना का प्रारूप तैयार करना** - पाठ के आरंभ में उचित पृष्ठभूमि का निर्माण आवश्यक है, जिससे बच्चों का ध्यान पाठ के मुख्य विचार की ओर जा सके। उदाहरण के लिए *ऐसे सूरज आता है* पाठ कविता के रूप में है। इसे पढ़ाने से पहले बच्चों के पूर्वज्ञान तथा अनुभवों पर चर्चा की जा सकती है। वे कक्षा एक में चंदा मामा शीर्षक कविता पढ़ चुके हैं। उनसे चाँद के बारे में बातचीत करते हुए प्रश्न पूछें और उनसे प्राप्त उत्तरों के आधार पर बताने को कहें - दिन में रोशनी कौन फैलाता है, सूरज किस दिशा से निकलता है, कब डूबता है, आदि। वार्तालाप द्वारा बच्चों को नवीन ज्ञान ग्रहण करने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चे *कबूतर और जाल* शीर्षक कहानी से कक्षा एक में चित्र-कथा के माध्यम से परिचित हो चुके हैं। उसके आधार पर पाठ की तैयारी की जा सकती है। वे कबूतर पक्षी के बारे में जानते हैं और जाल की भी उन्हें जानकारी होगी। कबूतर की आदतों और उसके भोजन के बारे में चर्चा करते हुए उन्हें कहानी की घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक बनाया जा सकता है।

2. **नवीन शब्द परिचय :** इस सोपान में यह निश्चित कर लेना उपयोगी होता है कि बच्चों ने प्रत्येक नए शब्द का पूर्ण रूप से अर्थ समझ लिया है और उसकी आकृति को पहचान लिया है। बच्चों को ऐसे शब्द अर्थपूर्ण संदर्भों में बोलकर सुनाए जाते हैं और तब उन्हें श्यामपट पर लिखा जाता है, जिससे वे उन्हें देख सकें और अपने मन में उनकी बनावट ग्रहण कर सकें। बच्चों को शब्द, उनके अर्थ, उनकी ध्वनि तथा उनके स्वरूप को पहचानने में सहायता देने के लिए विभिन्न उपायों द्वारा पर्याप्त अभ्यास कार्य देना आवश्यक होगा। शब्द परिचय के लिए एक उदाहरण लें। *साहसी बालक* शीर्षक पाठ में पूर्णचंद्र, लट्ठे, प्रतिदिन, झोंपड़ी आदि नए और कठिन शब्दों का प्रयोग है। इनमें अधिकतर संयुक्त व्यंजन वाले शब्द हैं। इन शब्दों का स्पष्ट उच्चारण बताकर बच्चों से बार-बार बुलवाइए। र के कई रूपों को उदाहरण देकर स्पष्ट करें, जैसे – *पूर्ण, वर्षा, प्रतिदिन, समुद्र* आदि। इसी प्रकार *चंदा* और *बाँस* जैसे शब्दों का उच्चारण करवाकर अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) ध्वनियों का अंतर स्पष्ट कीजिए। इन नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर पढ़वाइए। नए शब्दों का परिचय हमेशा अर्थपूर्ण संदर्भ में दीजिए, यानी वाक्य - प्रयोग द्वारा दीजिए, जैसे – पृथ्वी का अर्थ धरती न कहकर उसका वाक्य बनाएँ, जिससे अर्थ स्वयं स्पष्ट हो जाए। समान अर्थ वाले और उलटे अर्थवाले शब्द भी शब्दार्थ ग्रहण करने में सहायक होते हैं। पृथ्वी और धरती का अर्थ ज़मीन शब्द के प्रयोग द्वारा दें, क्योंकि बच्चा ज़मीन पहले से जानता है।

3. **वाचन :** इस सोपान में पहले बच्चों से अपनी पुस्तकें खोलने और पाठ का सही पृष्ठ निकालने के लिए कहा जाता है। शिक्षक/शिक्षिकाएँ पहले स्वयं आदर्श वाचन करें। अनुकरण वाचन करवाएँ और शुद्ध उच्चारण पर बल दें। सस्वर वाचन एक महत्त्वपूर्ण सोपान है, क्योंकि बालक/बालिकाएँ इस समय पहली बार अर्थपूर्ण इकाइयों के पठन से परिचित होते हैं। पठन के बीच-बीच में प्रश्न पूछकर ज्ञात करें कि बच्चे समझकर पढ़ रहे हैं। बीच-बीच में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक बच्चे को पाठ का अंश पढ़ने का अवसर दें। पाठ में दिए गए चित्रों पर विविध प्रश्न पूछें और पाठ में घटी घटनाओं से उनका संबंध स्थापित करें।

   पाठ पर आधारित विशिष्ट प्रकार के प्रश्न पूछकर सस्वर पठन को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनसे कहा जा सकता है कि वह पंक्ति पढ़ो, जिसमें बताया गया है कि कबूतर रात भर कहाँ आराम करते थे अथवा वे पंक्तियाँ पढ़ो, जिनमें बताया गया है कि कबूतर नीचे उतरने लगे, तो बूढ़े कबूतर ने उन्हें रोका, आदि। बच्चों को उचित विराम, और स्वर के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। बीच-बीच में वार्तालाप शैली में संवाद पढ़ने और अभिनयात्मक ढंग से पढ़ने पर भी बल दें।

4. **पढ़ने की कुशलताओं का विकास :** बच्चों को अधिक गति से और सरलता से पढ़ना सीखने में सहायता देने के लिए *कुछ विशेष प्रकार की कुशलताओं को सुव्यवस्थित ढंग से विकसित करना आवश्यक होता है। सामान्य* रूप से ये कुशलताएँ दो प्रकार की होती हैं — अर्थ-ग्रहण और शब्द बोध। शिक्षकगण प्रत्येक पाठ के अंत में दिए हुए *अभ्यासों तथा अभ्यास* पुस्तिका में दिए गए *अभ्यास, अध्यापन* संकेतों की मदद से कराएँ और देखें कि बच्चों ने उन्हें कितनी सावधानी से और कहाँ तक सही-सही किया है। इनके अतिरिक्त शिक्षक/शिक्षिकाएँ स्वयं ऐसे अभ्यास तैयार करें, जो बच्चों में पढ़ने की अपेक्षित कुशलताएँ विकसित करने में सहायक हों। शब्द बोध के लिए कार्ड बनाएँ और विभिन्न क्रियाकलापों में इनका उपयोग करें। वाक्य-फीतियों तथा चित्र-कार्डों का भी प्रयोग करें।

5. **अनुभव-विस्तार के क्रियाकलाप :** बच्चों द्वारा पाठ या कहानी का समझ के साथ पठन पूरा हो जाने के बाद भी उनके ज्ञान तथा अनुभव में विस्तार की अनेक संभावनाएँ रहती हैं। शिक्षक को इन संभावनाओं की पहचान कर उनका लाभ उठाने का प्रयत्न करना होगा। उदाहरण के लिए कबूतर, गिलहरी आदि के बारे में बच्चे पाठ पढ़ चुके हैं। चर्चा के माध्यम से उन्हें पक्षियों, उनकी आदतों, उनके भोजन, उनके रहने के स्थान आदि की जानकारी कराई जा सकती है, जिसका संबंध विशेष रूप से विज्ञान विषय से है। गिलहरी के बारे में चर्चा के साथ पेड़ पर या झाड़ियों में रहने वाले अन्य जीव-जंतुओं की जानकारी भी कराई जा सकती है। दाँतों की सफ़ाई पाठ से भोजन के पोषक तत्त्वों, भोजन के बारे में *सावधानियों आदि* की चर्चा करते हुए *स्वास्थ्य रक्षा, स्वच्छता* के महत्त्व आदि का ज्ञान कराया जा सकता है। भाषा-शिक्षक को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि भाषा-शिक्षण में विभिन्न विषयों से संबंध जोड़ने की अधिकाधिक संभावनाएँ रहती हैं।

सुव्यवस्थित पाठ-योजना के अनुसार शिक्षण करने के साथ ही शिक्षक/शिक्षिका को इस प्रकार के क्रियाकलाप कराने के संबंध में निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा, जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का समुचित विकास हो सके। इस दृष्टि से पाठों में दी गई कहानियों, संवादों आदि का अभिनय कराना उचित होगा। उदाहरण के लिए *कबूतर और जाल, चींटी और हाथी, आसमान गिरा, हंस किसका* आदि पाठों के अंशों का या पूरे पाठ का अभिनय कराया जा सकता है।

क्रियाकलापों के संदर्भ में यह ध्यान रखें कि यथासंभव वस्तुओं आदि को वास्तविक रूप में कक्षा में दिखाएँ और यदि यह संभव न हो, तो जीव-जंतुओं, वस्तुओं आदि के मॉडल या चित्रों का प्रयोग करें। बच्चों के समूह बनाकर क्रियाएँ कराने में वे उनमें सक्रिय होकर रुचिपूर्वक भाग लेंगे।

शब्दों के खेल रोचक होने के साथ ही बच्चों का भाषा ज्ञान बढ़ाने में सहायक होते हैं। खेल, पहेलियाँ बुझाना, चुटकुले सुनाना, समूहगान, क्रियागान, कागज़, मिट्टी या लुगदी से खिलौने बनाना, चित्र बनाना आदि क्रियाओं से कक्षा में कम बोलने वाले बच्चे भी प्रोत्साहित होते हैं और उनमें भाग लेने के लिए तत्पर रहते हैं।

इस प्रकार के क्रियाकलाप करवाते समय बच्चों के उच्चारण की ओर विशेष रूप से ध्यान दें। यदि कुछ ध्वनियों के उच्चारण में सूक्ष्म भेद को स्पष्ट नहीं किया गया और पर्याप्त अभ्यास नहीं कराया गया, तो बच्चों के उच्चारण में कमियाँ रह जाती हैं। अतः कुछ विशिष्ट ध्वनियों, जैसे — **इ-ई, ए-ऐ, ओ-औ, क-ख, ण-न, श-स, व-ब, छ-क्ष, द-ध** *आदि के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। इस पुस्तक में संयुक्त व्यंजनों का विशेष ज्ञान कराया गया है।* बच्चों को उनके उच्चारण और लिखित रूप का बार-बार अभ्यास कराएँ।

प्रारंभिक कक्षाओं में अक्षरों की बनावट तथा सुंदर लिखावट की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। एक बार लिखावट दृढ़ हो जाने पर उसमें सुधार लाना कठिन होता है। अतः इस कक्षा में बच्चों का ध्यान सुंदर और सुडौल अक्षर लिखने की ओर आकर्षित करें। वे छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख सकें, प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखकर दे सकें तथा किसी परिचित विषय पर पाँच-छह वाक्य लिख सकें • इस योग्यता का विकास दूसरी कक्षा के अंत तक अवश्य हो जाना चाहिए।

पाठ पढ़ाते समय बीच-बीच में बच्चों से कहानी से संबंधित प्रश्न भी पूछने चाहिए, जिससे पाठ के संबंध में उनकी उत्सुकता बनी रहे और वे उसके शेष भाग को पढ़ने में रुचि ले सकें। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य यहाँ कविता की लय और तान से परिचित कराना है, न कि उसका अर्थ समझाना। जहाँ कहीं कविता का भाव बच्चों को स्पष्ट न हो, वहाँ प्रश्नोत्तर द्वारा उसे स्पष्ट करें। पाठ्यपुस्तक में दी गई कविताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य कविताएँ भी कंठस्थ करवाएँ। कविता याद करने तथा सुनाने के लिए है। इससे संबंधित कोई भी प्रश्न लिखित परीक्षा में न पूछा जाए। बच्चे व्यक्तिगत रूप में या समवेत स्वर में उचित भाव-भंगिमा के साथ कविता गाएँ।

पाठों के अंत में दिए गए अभ्यासों की भाँति अन्य अभ्यास भी करवाए जा सकते हैं, जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का विकास हो सके। इस दृष्टि से इस पुस्तक के साथ अभ्यास पुस्तिका का भी निर्माण किया गया है, जिसमें प्रत्येक अभ्यास के उद्देश्य स्पष्ट रूप से लिखे गए हैं। जिन बच्चों को किसी विशेष कुशलता को ग्रहण करने में कठिनाई हो, उन्हें उसी प्रकार के अतिरिक्त अभ्यास देकर कुशलता को दृढ़ करें। अभ्यास पुस्तिका के प्रयोग से बच्चों की भाषा-योग्यताओं के विकास तथा दृढ़ीकरण में विशेष सहायता मिल सकेगी।

समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

प्रो. एम.जी. चतुर्वेदी
सेवानिवृत्त, एन.सी.ई.आर.टी.
173 नीलगिरी, अलकनन्दा
नई दिल्ली

श्रीमती संयुक्ता लूदरा
सेवानिवृत्त प्रवाचक, एन.सी.ई.आर.टी.
सी-20/सी, गंगोत्री अपार्टमैंट्स
अलकनन्दा, नई दिल्ली

श्री जगमोहन सिंह
परामर्शदाता, सीमैट, इलाहाबाद
1 के/3, रामप्रिया निवास
प्रयाग स्टेशन के पास
रामप्रिया रोड, इलाहाबाद (उ.प्र.)

डॉ. डी.एल.शर्मा
पूर्व प्राचार्य, गांधी विद्या मंदिर
54/68, मानसरोवर, जयपुर

प्रो. के.के. गोस्वामी
सेवानिवृत्त, केंद्रीय हिंदी संस्थान
ई-12, कैलाश कालोनी
नई दिल्ली

श्री रामगोपाल शर्मा
विभागाध्यक्ष, हिंदी, हिल ग्रोव स्कूल
ए-1, सफदरजंग एन्कलेव
नई दिल्ली

श्रीमती प्रेम वर्षा सेठी
हैड-मिस्ट्रेस, केन्द्रीय विद्यालय
रा.शै.अ. परिषद्, नई दिल्ली

श्री विजय नारायण पाण्डेय
शिक्षक, वसंत वैली पब्लिक स्कूल
वसंत कुंज, महरौली, महिपाल पुर
नई दिल्ली

सुश्री उषा वधवा
*टी.जी.टी.,*गवर्नमेंट को-एड मिडल स्कूल
सरस्वती गार्डन, 1-बी ब्लॉक,
रमेश नगर, नई दिल्ली

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय (प्रारंभिक शिक्षा विभाग)

प्रो. कृष्णकांत वशिष्ठ, *विभागाध्यक्ष*
डॉ. इन्दु सेठ, *प्रवाचक*
डॉ. लता पाण्डे, *प्रवाचक*
प्रो. रामजन्म शर्मा **(संयोजक)**

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो॰ क॰ गांधी

विषय सूची





1. प्यारा भारत



यहीं हिमालय-सा पहाड़ है,
यहीं गंग की धारा है।
यमुना लहराती है सुंदर,
भारत कितना प्यारा है!



फल-फूलों से भरी भूमि है,
खेतों में हरियाली है।
आमों की डालों पर बैठी,
गाती कोयल काली है।

अध्यापन संकेत : कविताएँ गाने और याद करने के लिए हैं। आप स्वयं कविता को कई बार उचित लय, तान और भाव-भंगिमा से पढ़ें। बच्चे सुनें और दोहराएँ। बार-बार कविता सुनाएँ और सुनें। इस प्रकार पूरी कविता याद कराएँ। पाठ्यपुस्तक की सभी कविताएँ इसी प्रकार कराएँ। कविता के अर्थ को केवल सरल प्रश्नों द्वारा ही स्पष्ट करें। सीधे-सीधे पंक्तियों के अर्थ न बताएँ। बच्चों का ध्यान उन शब्दों की ओर आकर्षित करें जिनकी तुक मिलती हो, जैसे – ***धारा-प्यारा, बनाया-खाया*** आदि। प्रश्नों के माध्यम से कविता के मूल भाव पर ध्यान दिलाते हुए देश की सुंदरता का बोध कराएँ और अपनी मातृभूमि से प्रेम करने की भावना जागृत करें।



बच्चो, माँ ने पाल-पोसकर,
तुमको बड़ा बनाया है!
लेकिन यह मत भूलो तुमने,
अन्न कहाँ का खाया है!

तुमने पानी पिया कहाँ का,
खेले मिट्टी में किसकी !
चले हवा में किसकी! बोलो,
बच्चो, प्यारे भारत की।

— गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश'

बताओ इस कविता को याद करो।

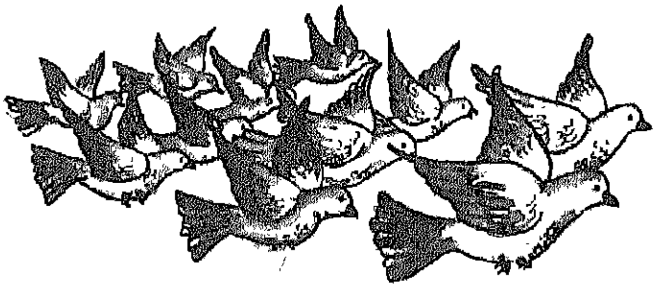
(क) हमारे देश का क्या नाम है?
(ख) यहाँ कौन-कौन-सी नदियाँ हैं?
(ग) आपको अपना देश क्यों अच्छा लगता है?

पढ़ो और समझो

भूमि	=	ज़मीन	अन्न	=	अनाज
गंग	=	गंगा	यमुना	=	यमुना नदी

2. कबूतर और जाल

पीपल	कबूतर	भोजन	धरती	
चिल्लाना	बहेलिया	ज़ोर	इशारा	
मित्र	उन्हें	मदद	क्षमा	धन्यवाद



जंगल में पीपल का एक पेड़ था। पेड़ पर बहुत से कबूतर रहते थे। कबूतर दिनभर भोजन की खोज में घूमते रहते। रात होने पर वे सब पीपल के पेड़ पर लौट आते।

अध्यापन संकेत : हाव-भाव तथा स्वर के उतार-चढ़ाव द्वारा, अभिनयात्मक ढंग से कहानी सुनाएँ। पाठ में आए नए शब्दों का प्रयोग कहानी कहते समय करें। इस पाठ में कुछ संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग है, जिन्हें पहले व्यंजन की पाई हटाकर, दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ा गया है, जैसे – ल्ल, न्य, न्ह। इन संयुक्त व्यंजनों से बनने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण करवाएँ। संयुक्त व्यंजन के लिखित रूप पर ध्यान दिलाएँ। ज़ और फ़ से अंतर स्पष्ट करने के लिए जलेबी-ज़मीन, फल-साफ़ जैसे शब्दों के उदाहरण दें। ड और ड़, ढ और ढ़ ध्वनियों के उच्चारण और लिखित रूप का अंतर स्पष्ट करें।

एक दिन की बात है। कबूतर भोजन की खोज में गए। थोड़ी दूर उड़ने पर एक छोटा कबूतर बोला, "देखो, उधर देखो। कितना दाना बिखरा पड़ा है। धरती पर कितना दाना बिखरा पड़ा है।"



सभी कबूतर उधर देखने लगे। उन्हें धरती पर बहुत-सा दाना दिखाई पड़ा। वे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।



तभी एक बूढ़ा कबूतर बोला, "ठहरो, ठहरो। अभी वहाँ मत जाओ। जंगल में इतना दाना कहाँ से आया?"

दूसरा कबूतर बोला, "कहीं से भी आया हो। आओ, हम सब मिलकर दाना खाएँ।"

कबूतर धरती पर उतरने लगे। वे दाना चुगने लगे। पर बूढ़ा कबूतर उनके साथ नहीं गया। वह दूर से ही देखता रहा। कबूतरों

इनका बार-बार उच्चारण करवाएँ तथा लिखवाएँ। ड़ और ढ़ शब्द के शुरू में नहीं आते। ***ध्यान दिलाएँ*** : मिलजुल कर करने से सभी काम आसान हो जाते हैं। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। हमें बड़ों का कहना मानना चाहिए। ***चर्चा करें*** : सभी कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से क्षमा क्यों माँगी? कहानी का अभिनय करवाएँ। ध्यान रखें कि कक्षा के सभी बच्चे इस तरह के क्रियाकलापों में भाग लें।



ने पेटभर दाना खाया। अब वे उड़ना चाहते थे, पर उड़ न सके। वे जाल में फँस गए थे।

कबूतर चिल्लाने लगे, "बचाओ, बचाओ। हम जाल में फँस गए हैं।"



तभी एक कबूतर चिल्लाया, "उधर देखो, अरे, अरे, वह तो बहेलिया है। वह हमें पकड़ने आ रहा है।"

बूढ़ा कबूतर बोला, "घबराओ मत। सब मिलकर ज़ोर लगाओ। जाल को लेकर एक साथ उड़ चलो।"

सभी कबूतरों ने मिलकर ज़ोर लगाया। जाल कुछ ऊँचा उठा। कबूतरों ने और ज़ोर लगाया।

अब कबूतर जाल लेकर उड़ने लगे। बूढ़ा कबूतर आगे-आगे उड़ रहा था। सब कबूतर उसके पीछे थे।

बूढ़ा कबूतर उन्हें लेकर बहुत दूर उड़ गया। उसने एक पेड़ की तरफ़ इशारा किया। वह बोला, "यहाँ एक चूहा रहता है। वह मेरा मित्र है। वह हमारी मदद करेगा। यहीं उतर जाओ।"

बूढ़े कबूतर ने चूहे को बुलाया। चूहे ने जाल काट दिया। कबूतर जाल से निकल आए। उन्होंने चूहे को धन्यवाद दिया। सभी कबूतरों ने अब बूढ़े कबूतर से क्षमा माँगी और उसे धन्यवाद दिया।



पढ़ो और बताओ, कौन-कौन-सी बात सही है?

(क) बूढ़ा कबूतर बोला, "चूहा मेरा मित्र है।"

(ख) जंगल में नीम का एक पेड़ था।

(ग) बूढ़ा कबूतर चतुर था।

(घ) कबूतर जाल में फँस गए।

(ङ) बूढ़े कबूतर ने सबसे क्षमा माँगी।

वाक्य पूरे करो

दाना धरती मदद क्षमा जाल

(क) बहुत-सा दाना __________ पर बिखरा था।

(ख) जंगल में इतना __________ कहाँ से आया?

(ग) कबूतर __________ में फँस गए थे।

(घ) चूहा हमारी __________ करेगा।

(ङ) कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से __________ माँगी।

वाक्य बनाओ

कबूतर	जाल काट दिया।
चूहे ने	आगे-आगे उड़ रहा था।
कबूतरों ने	पीपल के पेड़ पर रहते थे।
बूढ़ा कबूतर	चूहे को धन्यवाद दिया।

पढ़ो और लिखो

पिल्ला	गुल्ली	बिल्ली	चिल्लाना
नन्हा	इन्हें	उन्हें	उन्होंने
कन्या	न्याय	धन्य	धन्यवाद

पढ़ो

ज	=	जवाब	जाल	राजा
ज़	=	ज़मीन	कागज़	दरवाज़ा
फ	=	फल	फूल	मूँगफली
फ़	=	तरफ़	सफ़ाई	माफ़
ड़	=	पेड़	बड़ा	लड़का
ढ़	=	पढ़ना	बूढ़ा	चढ़ना



3. गिलहरी

अचानक	**पत्थर**	**प्यारी**	**भाइयों**
मूँगफली	**कुतर**	**शरीर**	**धारियाँ**
रुक	**मुलायम**	**फुरतीली**	**चमकीली**

रमेश और सुधीर दो भाई थे। एक दिन वे पेड़ के नीचे खेल रहे थे। अचानक सुधीर बोला, "भैया। वह देखो, गिलहरी।" यह कहकर सुधीर ने पत्थर उठा लिया।

रमेश ने कहा, "नहीं, नहीं। पत्थर मत मारो। गिलहरी किसी को नहीं काटती। देखो, कितने मज़े से कुतर-कुतर



कर बेर खा रही है। कितनी प्यारी है। चलो, उसके पास चलें।"



सुधीर बोला, "अरे। यह तो पेड़ पर चढ़ गई।"

रमेश ने कहा, "गिलहरी को फल बहुत अच्छे लगते हैं। इसे मूँगफली भी बहुत अच्छी लगती है। अगर इसे मूँगफली दें तो यह हमारे पास आ जाएगी।"

सुधीर ने एक मूँगफली गिलहरी को दिखाकर फेंकी। गिलहरी बड़ी तेज़ी से नीचे उतरी। वह मूँगफली उठाकर पेड़ की डाल पर चढ़ गई और कुतर-कुतर कर मूँगफली खाने लगी।

अध्यापन संकेत : नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण कराएँ। रुकना, रुपया, रुई - शब्दों में र् के साथ उ की मात्रा का प्रयोग है। इन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर र् में उ की मात्रा (ु) के लिखित रूप की ओर ध्यान दिलाएँ। अन्य व्यंजनों में उ की मात्रा नीचे लगती है - इस अंतर को स्पष्ट करें। इस पाठ में घुंडी हटाकर बनने वाले संयुक्त व्यंजन का प्रयोग है, जैसे – क्या। क को दूसरे व्यंजन से संयुक्त करते समय इसकी घुंडी को हटा देते हैं, जैसे – क्या, वाक्य, क्यारी शब्दों में। इनका उच्चारण कराएँ और इन्हें लिखवाएँ। सुंदर, मूँगफली आदि शब्दों में अनुस्वार और अनुनासिक चंद्रबिंदु का उच्चारण स्पष्ट रूप से करें। नहीं, में, फेंकी, हैं आदि शब्दों में अनुनासिक (ँ) उच्चारण है। यद्यपि लिखने में अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लिखी होने के कारण अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लिखने की छूट है। ***चर्चा द्वारा ध्यान दिलाएँ :*** हमें जीवों से प्यार करना चाहिए। उन्हें सताना नहीं चाहिए।

रमेश बोला, "देखो, गिलहरी के शरीर पर कितनी सुंदर धारियाँ हैं। इसके बाल बड़े मुलायम होते हैं।"

सुधीर ने कहा, "भैया यह गिलहरी बहुत सुंदर है। आओ, इसे पकड़ें। मैं इसे घर ले जाऊँगा।"

रमेश बोला, "सुधीर, गिलहरी बड़ी फुरतीली होती है। इसे पकड़ना आसान काम नहीं। ज़रा-सी आवाज़ होते ही यह पेड़ पर चढ़ जाती है।"

सुधीर ने पूछा, "क्या गिलहरियाँ पेड़ पर रहती हैं?"

रमेश ने उत्तर दिया, "हाँ गिलहरियाँ पेड़ पर ही रहती हैं। वही उनका घर होता है।"

इतने में गिलहरी फिर पेड़ से उतरी। वह एक जगह रुक गई। अपनी चमकीली आँखों से वह दोनों भाइयों को देखने लगी। सुधीर उसे पकड़ने दौड़ा। गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ गई।

सुधीर देखता ही रह गया।



बताओ

(क) गिलहरी कहाँ रहती है?

(ख) गिलहरी क्या-क्या खाती है?

(ग) सुधीर ने पत्थर क्यों उठाया?

(घ) सुधीर गिलहरी को क्यों नहीं पकड़ पाया?

पढ़ो, समझो और बताओ

लड़की	लड़कियाँ
नदी	नदियाँ
धारा	————
बकरी	————
गिलहरी	————

पढ़ो और लिखो

प्यारा	प्यास	प्याऊ
उत्तर	पत्ती	कुत्ता
पत्थर	कत्था	हत्था
क्या	क्यारी	क्यों
रुकना	रुपया	रुई

वाक्य पूरे करो

पेड़ फुरतीली तेज़ी मूँगफली धारियाँ

(क) गिलहरी बड़ी ———————— से नीचे उतरी।

(ख) गिलहरी को ————————अच्छी लगती है।

(ग) गिलहरी के शरीर पर ———————— होती हैं।

(घ) गिलहरी बड़ी ———————— होती है।

(ङ) गिलहरी ———————— पर रहती है।

4. बकरी का बच्चा और भेड़िया

बच्चे	**बच्चों**	**शैतान**	**पत्तियाँ**	**तुम्हें**
भेड़िया	**शिकारी**	**कुत्ते**	**कोशिश**	**अच्छा**

एक बकरी थी। बकरी के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ-साथ रहते थे। जहाँ वह जाती, बच्चे भी उसके साथ-साथ जाते।

एक दिन बकरी ने बच्चों से कहा, "आज मैं जंगल से घास लाने जा रही हूँ। तुम घर पर ही रहना। बाहर मत जाना।"



अध्यापन संकेत : इस पाठ में श का कई बार प्रयोग हुआ है। श और स वाले शब्द श्यामपट पर लिखकर या कार्डों से पढ़वाकर दोनों ध्वनियों के उच्चारण के अंतर को स्पष्ट करें। र में ऊ की मात्रा (ॢ) नीचे न लगकर, बीच में लगती है, जैसे– रू। ज़रूर, शुरू, रूठना – शब्दों में इसका लिखित रूप दिखाएँ तथा लिखने का अभ्यास कराएँ। रुकना-रूठना और रूमाल द्वारा ु, ू का अंतर बोलने और लिखने में स्पष्ट करें।

बकरी का छोटा बच्चा बहुत शैतान था। वह चुपके से माँ के पीछे-पीछे चला गया। जंगल के पास एक नाला था। नाले के किनारे हरी-हरी झाड़ियाँ थीं। वह वहाँ पत्तियाँ खाने लगा। बकरी आगे निकल गई।



नाले के किनारे एक भेड़िया पानी पी रहा था। उसने दूर से बकरी के बच्चे को देखा। भेड़िए ने सोचा - अहा। बकरी का बच्चा। आज मैं इसे ज़रूर खाऊँगा। वह धीरे-धीरे उसके पास गया और बोला, "कहो बेटे, क्या कर रहे हो?"

बकरी के बच्चे ने ऊपर देखा। भेड़िए को देखकर वह बहुत डर गया। वह कुछ भी न बोल सका।

भेड़िया फिर बोला, "खाओ, खाओ, खूब खाओ। मुझे भी बहुत दिन से खाने को कुछ नहीं मिला। आज मैं तुम्हें खाऊँगा।"

बकरी का बच्चा डरते-डरते बोला, "भेड़िए मामा, मैं तो अभी बहुत छोटा हूँ।"

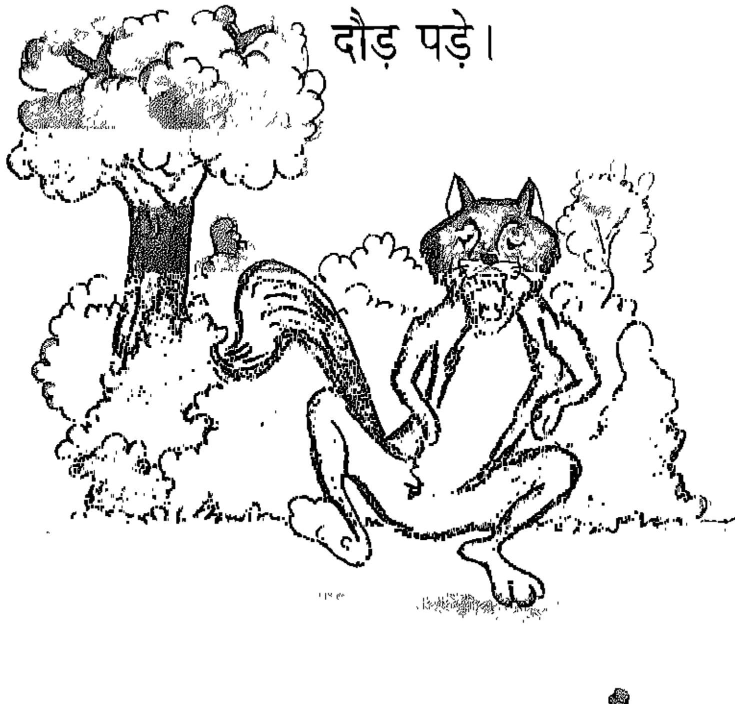
भेड़िया बोला, "मुझे बकरी के छोटे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं।"

बकरी का बच्चा कुछ सोचने लगा। फिर बोला, "मामा, पहले मुझे एक गाना सुना दो। फिर मुझे खा लेना।"

भेड़िया बोला, "गाना। मुझे गाना नहीं आता।"

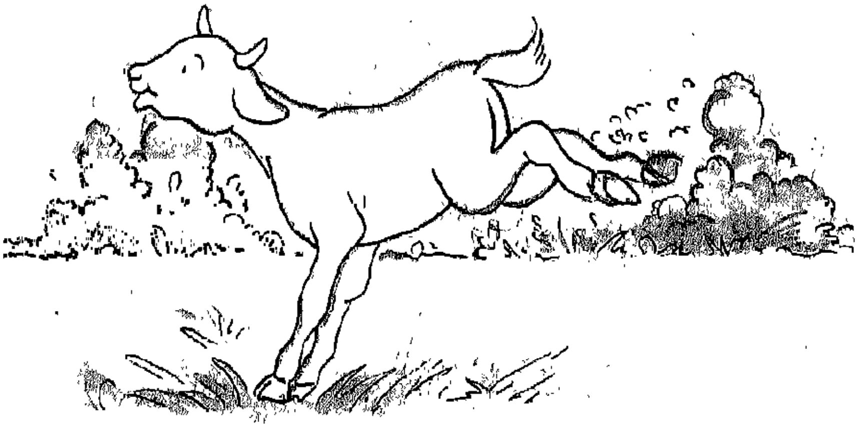
बकरी के बच्चे ने फिर कहा, " मेरी माँ तो कहती है, भेड़िया मामा बहुत अच्छा गाते हैं।"

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ। वह ऊँची आवाज़ में गाने लगा। कुछ दूरी पर शिकारी कुत्ते जा रहे थे। कुत्तों ने भेड़िए की आवाज़ सुनी। वे सब नाले की ओर दौड़ पड़े।



भेड़िया आँखें बंद किए गा रहा था। इतने में कुत्ते वहाँ आ पहुँचे। भेड़िया घबरा गया। उसने भागने की कोशिश की, पर कुत्तों ने भेड़िए को पकड़ लिया।

बकरी का बच्चा तेज़ी से घर भाग गया।



बताओ

(क) बकरी जंगल में क्यों गई?

(ख) बकरी के बच्चे को नाले पर कौन मिला?

(ग) बकरी का बच्चा क्यों डर गया?

(घ) भेड़िए के गाना गाने पर क्या हुआ?

(ङ) बकरी का बच्चा तुम्हें कैसा लगा?

पढ़ो, समझो और लिखो

(क) पढ़	पढ़ो	पढ़ें	(ख) बेटा	बेटी
देख	______	______	दादा	______
कह	______	______	मामा	______

आ	आओ	आएँ		लड़का	______
खा	______	______		चाचा	______
गा	______	______		नाना	______

वाक्य पूरे करो

(क) बकरी के दो ______ थे। (बच्चे/बच्चा)

(ख) भेड़िए की आवाज़ सुनकर ______ दौड़ पड़े। (कुत्ते/कुत्ता)

(ग) जंगल के पास ______ था। (नाला/नाले)

(घ) ______ पानी पी रहा था। (भेड़िया/भेड़िए)

पढ़ो और समझो

(क)

सच्चा	बच्चा	पच्चीस	च्	+	च	=	च्च
पत्ती	गत्ता	छत्ता	त्	+	त	=	त्त
अच्छा	मच्छर	गुच्छा	च्	+	छ	=	च्छ
तुम्हारा	कुम्हार	तुम्हें	म्	+	ह	=	म्ह

(ख)

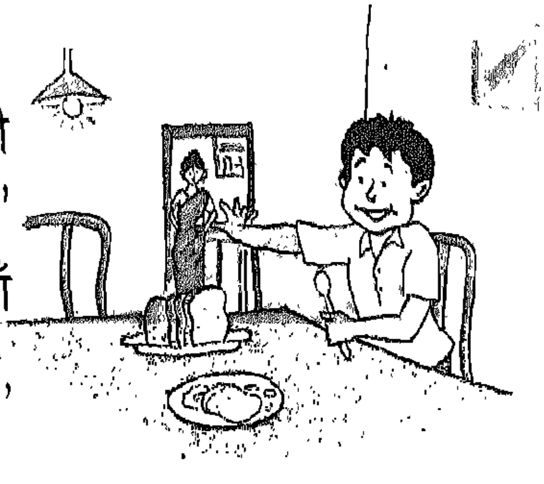
उ	ु	दुकान	तुम	जामुन	खुश
ऊ	ू	दूर	बूढ़ा	जादू	सूई
उ	ु	रुई	रुकना	रुपया	गुरु जी
ऊ	ू	रूमाल	रूठना	शुरू	ज़रूर

5. पाँच मिनट में

नाश्ता दुकान अध्यापक समाप्त स्कूल



एक लड़का था - गोपी। गोपी की माँ रोज़ सुबह उसे जगाती। वह आँखें बंद किए कहता, "पाँच मिनट में उठता हूँ।" पर वह फिर सो जाता।



माँ नहाने के लिए कहती तो गोपी बोलता, "पाँच मिनट में नहाता हूँ।" पर वह खेलता ही रहता। जब माँ नाश्ता करने को कहती तो गोपी कहता, "पाँच मिनट में।"

अध्यापन संकेत : इस पाठ में पाई । (ा) हटाकर बनने वाले दो प्रकार के संयुक्त व्यंजन सिखाए गए हैं, जैसे – ध्य, प्त, स्क, श्त। ध्यान, समाप्त, स्कूल, नाश्ता, ग्यारह आदि शब्द श्यामपट पर लिखकर समझाएँ कि स्क, ध्य और प्त को संयुक्त रूप में लिखते समय स, ध और प्त की खड़ी पाई हटा दी गई है, परंतु श्त और ग्य में ग और श का पिछला भाग (ा) जो वास्तव में पाई ही है, हटाया गया है। इसी प्रकार पाठ के अन्य शब्दों को पढ़ने और लिखने का अभ्यास कार्डों द्वारा करवाएँ। कक्षा में अभिनय कराएँ। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाएँ कि सभी काम समय पर करने चाहिए।

पाँच मिनट करते-करते गोपी रोज़ स्कूल देर से पहुँचता। अध्यापक समझाते - स्कूल समय पर आया करो। गोपी अपनी आदत के कारण कुछ न सुनता। कक्षा में भी वह अपना काम समय पर पूरा न कर पाता। दूसरे बच्चे काम समाप्त करके खेलने चले जाते, गोपी वहीं बैठा रहता।



एक दिन स्कूल में जादू का खेल दिखाया जाना था। अध्यापक ने बच्चों को सुबह दस बजे आने के लिए कहा।

बच्चे समय पर स्कूल पहुँच गए। कुछ बच्चों को थोड़ी देर हो गई थी। वे भागते हुए स्कूल जा रहे थे।

गोपी घर के बाहर खेल रहा था। एक बच्चा बोला, "गोपी देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो। जादू का खेल शुरू हो जाएगा।"



गोपी बोला, 'तुम चलो, मैं पाँच मिनट में आता हूँ।"

पाँच मिनट करते-करते गोपी को बहुत देर हो गई।

जब गोपी स्कूल पहुँचा तो खेल समाप्त हो चुका था। सभी बच्चे जादू के खेल की बातें करते हुए लौट रहे थे। वे बहुत खुश थे।

गोपी उदास खड़ा था। वह सोचने लगा - अब मैं सभी काम समय पर करूँगा।

बताओ, किसने कहा? कब कहा?

(क) अभी पाँच मिनट में उठता हूँ।

(ख) देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो।

(ग) तुम चलो, मैं पाँच मिनट में पहुँचता हूँ।

पढ़ो और समझो

ध्यान	अध्यापक	अध्यापिका	ध्	+	य	=	ध्य
समाप्त	गुप्त	सप्ताह	प्	+	त	=	प्त
नाश्ता	रिश्ता	कुश्ती	श्	+	त	=	श्त

वाक्य बनाओ

गोपी	समय पर स्कूल पहुँच गए।
माँ	समय पर आया करो।
बच्चे	एक लड़के का नाम था।
स्कूल	रोज़ सुबह गोपी को जगाती।

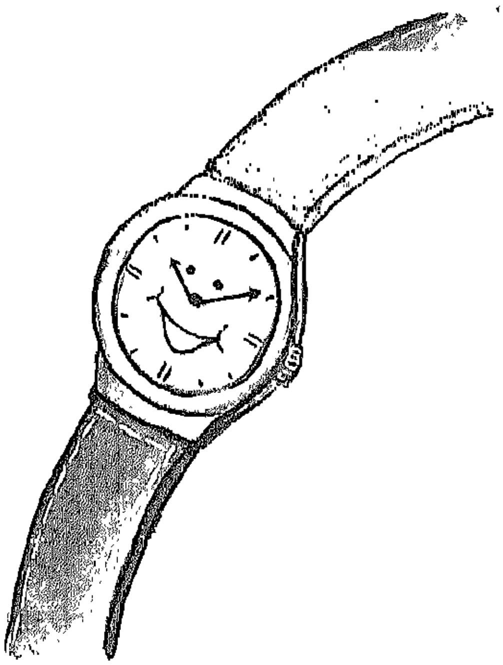
लिखो

गोपी कैसा लड़का था? तुम गोपी की जगह होते तो क्या करते?

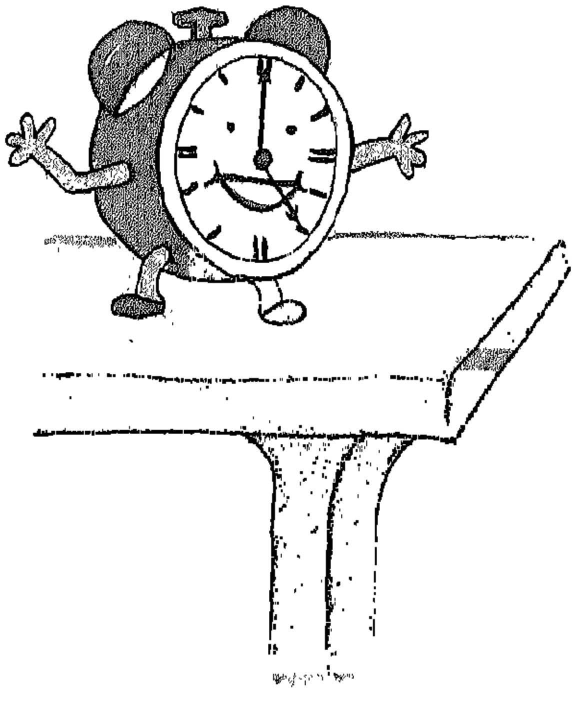
करो

चित्र बनाकर दिखाओ कि स्कूल आने से पहले तुम क्या-क्या करते हो।

6. छोटी-सी चीज़



छोटी-सी हूँ लेकिन फिर भी
बड़े काम की मानी जाती
सदा समय की पाबंदी मैं
रखना सबको हूँ सिखलाती।



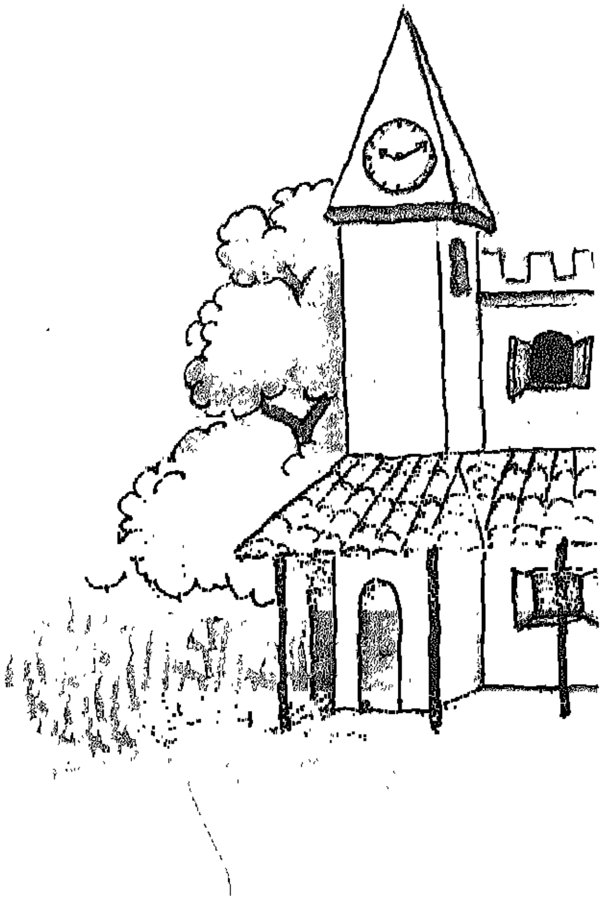
कभी जेब में पड़ी ठुमकती
कभी कलाई पर बँध जाती
कभी मेज़ पर बैठ ठाठ से
टिक-टिक टिक-टिक राग सुनाती।

अध्यापन संकेत : कविता को लय और तान के साथ दो-तीन बार पढ़िए और बच्चों को सुनाइए। बच्चे पुस्तक बंद रखकर कविता का आनंद लें। घड़ी की उपयोगिता बताते हुए समय पालन पर चर्चा करें। अलग-अलग तरह की घड़ियाँ दिखाएँ तथा उनके चित्र बनवाएँ।

छोटी हूँ पर घंटाघर के
ऊपर होती बहुत बड़ी हूँ
सोच रहे होंगे - मैं क्या हूँ
मैं तो केवल एक घड़ी हूँ।

अच्छा मुझे नहीं लगता है
पलभर भी रुकना-सुस्ताना
अच्छा मुझे बहुत लगता है
चलना, बस चलते ही जाना।

— दामोदर अग्रवाल



बताओ

इस कविता को याद क

(क) घड़ी को क्या अच्छा नहीं लगता?
(ख) घड़ी हमें क्या सिखाती है?

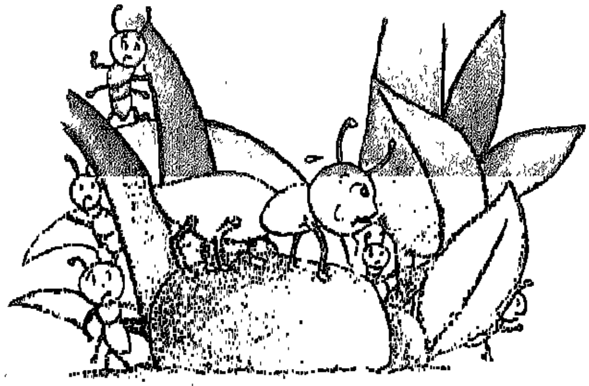
करो

घड़ी का चित्र या मॉडल बनाओ।



7. चींटी और हाथी

चींटी	**पेड़-पौधों**	**दुखी**	**परिवार**
ज़्यादा	**कमज़ोर**	**मौज**	**दशा**
परेशान	**सूँड़**	**कुचल**	

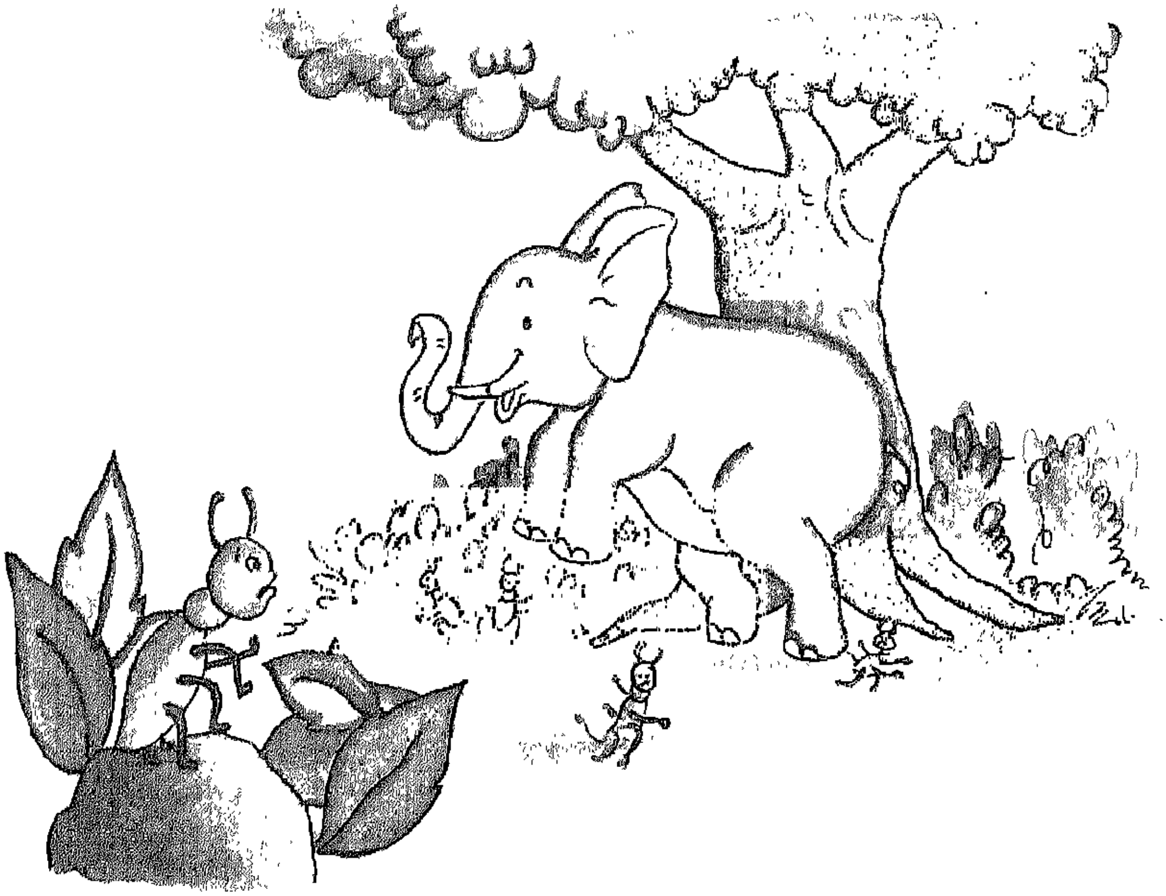


जंगल में एक चींटी रहती थी। वह रोज़ सुबह भोजन की तलाश में चल पड़ती थी। परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे-पीछे चलतीं।

वहाँ एक हाथी भी रहता था। वह दिनभर इधर-उधर घूमता रहता था। जंगल के पेड़-पौधों को तोड़ता। कभी-कभी हाथी अपनी सूँड़ में पानी भरकर लाता और जानवरों पर डाल देता। जंगल के जानवर उससे बहुत परेशान रहते।

हाथी की एक बुरी आदत और भी थी। जहाँ कहीं भी वह चींटियों को देखता, कुचल देता। चींटी यह सब देखती और दुखी होती।

अध्यापन संकेत : कहानी में आए पात्रों - चींटी और हाथी के बारे में बातचीत करें। हाव-भाव के साथ कहानी सुनाएँ। कठिन शब्दों का उच्चारण करवाएँ तथा वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें। ज़ और फ़ ध्वनियों वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। चींटियों के बारे में कुछ जानकारी दें। हाथी की कोई और कहानी बच्चों से सुनें या स्वयं सुनाएँ।



एक दिन चींटी ने हाथी से कहा, "तुम दूसरों को बहुत सताते हो, यह बात ठीक नहीं।"

हाथी बोला, "चुप रहो। मैं चाहे जो करूँ। तुम बहुत छोटी हो। ज्यादा बोलोगी, तो तुम्हें भी कुचल दूँगा।"

चींटी चुप हो गई और घास में जाकर छिप गई।

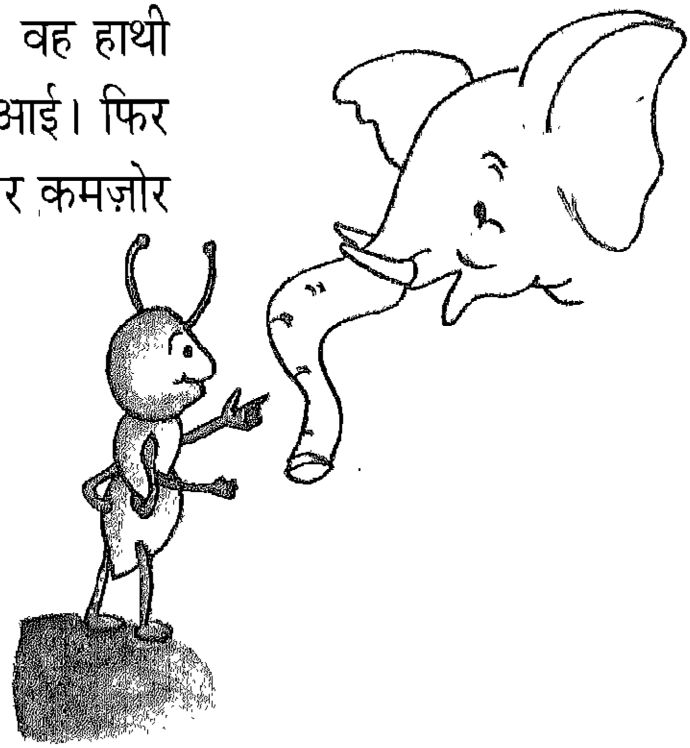
हाथी इधर-उधर घूम रहा था। तभी चींटी चुपके से उसकी सूँड़ में घुस गई और उसे काटने लगी।



हाथी परेशान होने लगा। उसने सूँड़ को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया। पर उसकी परेशानी किसी तरह भी कम न हुई । तब चींटी बोली, "परेशान क्यों हो रहे हो? तुम भी तो दूसरों को बहुत सताते हो।"

हाथी बहुत दुखी हो गया। वह बोला, "मुझे माफ़ कर दो। अब मैं किसी को कभी नहीं सताऊँगा।"

चींटी को दया आ गई। वह हाथी की सूँड़ से बाहर निकल आई। फिर बोली, "किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।"



बताओ, कौन-कौन-सी बात सही है?

(क) परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे चलतीं।

(ख) हाथी सभी जानवरों से प्यार करता था।

(ग) चींटी चुपके से हाथी की सूँड़ में घुस गई।

(घ) जंगल के जानवर चींटी से परेशान थे।

(ङ) किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।

पढ़ो, समझो और लिखो

कमज़ोर	बलवान	ज्यादा	कम
भीतर	———	अच्छा	———
दुखी	———	ऊपर	———

वाक्य बनाओ

सूँड़ कमज़ोर अच्छा साफ़ जंगल



करो

मुखौटे पहनकर कहानी का अभिनय करो।

4. फूलकुमारी

हँसने	**दाढ़ी**	**मुरझाना**	**महाराज**
मंत्री	**इनाम**	**तमाशेवाला**	**चिड़ियाँ**

एक था राजा। एक थी रानी। उनकी बेटी थी फूलकुमारी। जब फूलकुमारी खुश होती, ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगती।



एक दिन फूलकुमारी राजा और रानी के साथ बगीचे में बैठी थी। तभी वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। यह देखकर राजा ने कहा, "तुम ऐसे ज़ोर-ज़ोर से क्यों हँसती हो?"

अध्यापन संकेत : बच्चों से राजा-रानी की कोई कहानी सुनाने को कहें। कहानी पर चर्चा करते हुए बच्चों से यह कहानी स्वयं पढ़ने को कहें। अनुनासिक (ँ) और अनुस्वार (ं) वाले शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें। कहानी का अभिनय करवाएँ। त्र के अभ्यास के लिए - पत्र, चित्र, मित्र, पुत्र, पुत्री, छात्र आदि शब्द कार्डों से पढ़वाएँ। खुश-उदास का उदाहरण देकर कुछ अन्य उलटे अर्थवाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ।

यह सुनकर फूलकुमारी उदास हो गई। अब वह न तो हँसती थी, न खेलती थी और न नाचती-गाती थी। वह उदास रहने लगी।

अपनी बेटी को उदास देखकर रानी बहुत उदास हो गईं। बेटी और रानी को उदास देखकर राजा भी उदास रहने लगा।

एक दिन राजा बहुत उदास बैठा था। उसके पास एक आदमी आया और बोला, "महाराज। सब फूल मुरझाने लगे हैं। वे उदास हो गए हैं।"



एक और आदमी आया। वह बोला, "महाराज! सब चिड़ियाँ उदास हो गई हैं।"

इसके बाद एक आदमी और आया। उसने राजा से कहा, "महाराज! महाराज! सब बच्चे उदास हो गए हैं।"

यह सुनकर राजा सोचने लगा - फूलकुमारी, फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए हैं।

राजा और रानी ने अपनी बेटी से कहा, "हँसो बेटी, हँसो।" पर फूलकुमारी नहीं हँसी। वह अब भी उदास थी।

राजा ने मंत्री से कहा, "हमारी बेटी बहुत उदास रहती है। जाओ, सबसे कह दो, जो फूलकुमारी को हँसा देगा, हम उसे बहुत इनाम देंगे।"



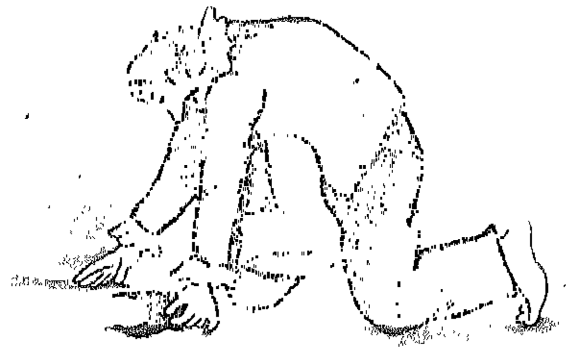
यह सुनकर बहुत से लोग आए। भालूवाला आया। उसने भालू का नाच दिखाया। बंदरवाला आया। उसने बंदर को नचाया। नाच देखकर सब लोग हँसे, फूलकुमारी नहीं हँसी।

तभी एक और तमाशेवाला बकरे पर बैठकर आया। वह आते ही नाचने लगा। उसे देखकर बकरा नाचने लगा। यह देखकर सब हँसे, पर फूलकुमारी नहीं हँसी।

नाचते-नाचते तमाशेवाले की टोपी गिर गई। उसने टोपी उठाई तो दाढ़ी गिर गई। यह देखकर सब लोग हँस पड़े, पर फूलकुमारी फिर भी नहीं हँसी।

जब तमाशेवाले ने अपनी दाढ़ी उठाई तो उसका मोटा-सा पेट गिर पड़ा। यह देखते ही फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।

फूलकुमारी के हँसते ही फूल, चिड़ियाँ और बच्चे भी चहक उठे। राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।



बताओ, क्यों?

(क) फूलकुमारी उदास रहने लगी।

(ख) फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए।

(ग) फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।

(घ) राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।

पढ़ो, समझो और लिखो

(क)	राजा	रानी	(ख)	बादल	बादलों से
	राजकुमार	———		तालाब	——— में
	लड़का	———		लड़का	——— को
	बेटा	———		बंदर	——— का

पढ़ो और लिखो

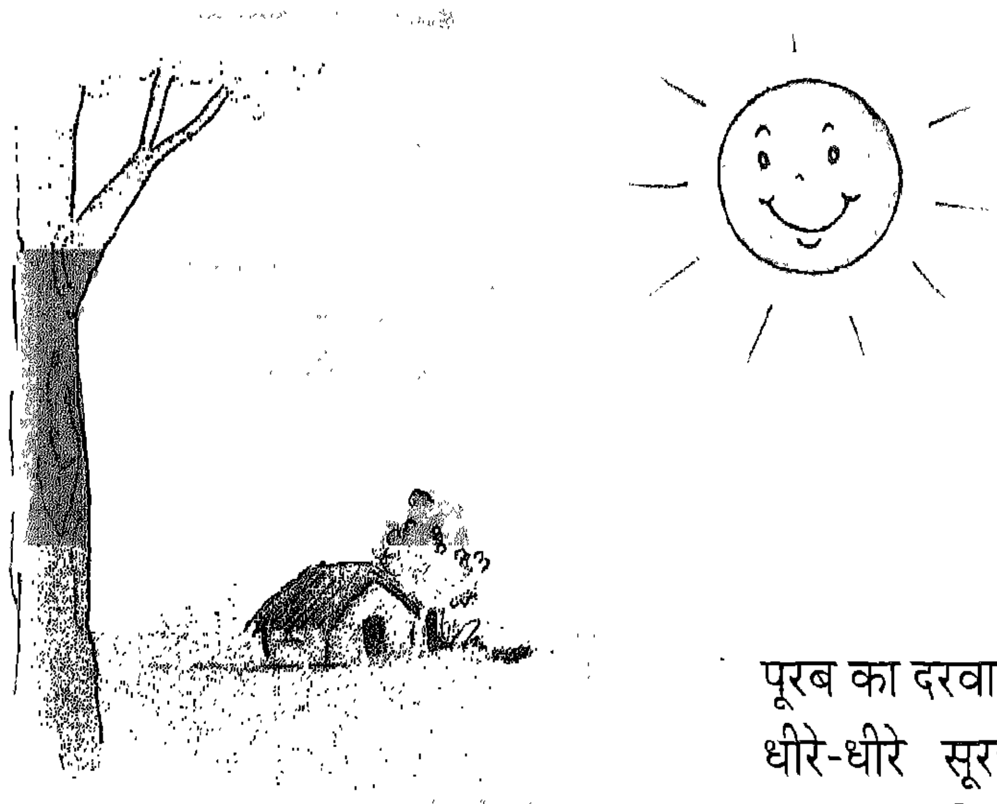
फूलकुमारी	राजकुमार	चिड़ियाँ	हँसना	सूर्य
तमाशेवाला	मुरझाने	बकरा	दाढ़ी	मंत्री

करो

(क) कागज से अलग-अलग तरह की टोपियाँ बनाओ।

(ख) मुखौटे पहनकर कहानी का अभिनय करो।

9. ऐसे सूरज आता है



पूरब का दरवाज़ा खोल
धीरे-धीरे सूरज गोल
लाल रंग बिखराता है
ऐसे सूरज आता है।

अध्यापन संकेत : पूछिए - सुबह सूरज निकलते हुए किस-किसने देखा है? उस समय उसका रंग कैसा होता है? सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है? आदि। बताइए कि दोपहर को सूरज बहुत तेज़ चमकता है। शाम होते-होते धूप कम होने लगती है और फिर सूरज डूब जाता है। डूबते समय उसका रंग फिर लाल होता है। बच्चों को निकलते और डूबते सूर्य को देखने के लिए प्रेरित करें। चर्चा द्वारा कविता का मूल भाव स्पष्ट करें। चारों दिशाओं का ज्ञान करवाएँ। कविता को पूर्व विधि द्वारा याद करवाएँ।



गाती हैं चिड़ियाँ सारी
खिलती हैं कलियाँ प्यारी
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है
ऐसे सूरज बढ़ता है।

लगते हैं कामों में सब
सुस्ती कहीं न रहती तब
धरती-गगन दमकता है
ऐसे तेज़ चमकता है।

गरमी कम हो जाती है
धूप थकी-सी आती है
सूरज आगे चलता है
ऐसे सूरज ढलता है।



बताओ

(क) सूरज किधर से निकलता है?
(ख) सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है?
(ग) सूरज किधर छिपता है?
(घ) सूरज के छिपने पर क्या होता है?

पढ़ो और समझो

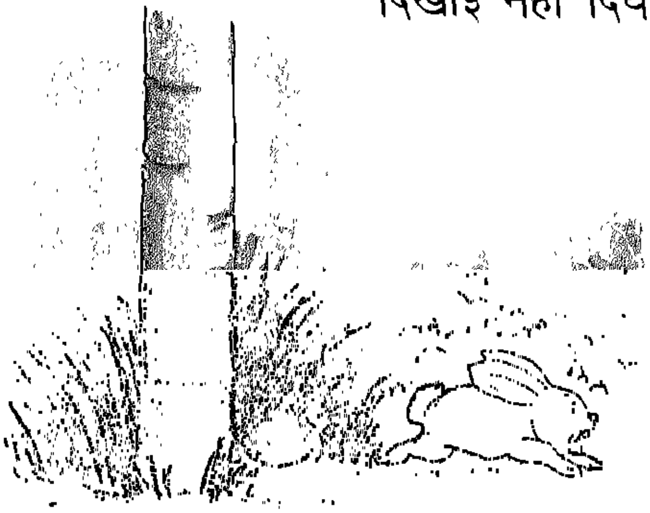
धरती	=	ज़मीन	ढलना	=	छिपना
गगन	=	आसमान	दमकना	=	चमकना

10. आसमान गिरा

खरगोश आवाज़ धम्म ठहरो लोमड़ी
आसमान जल्दी चौंक दहाड़ तुम्हारा

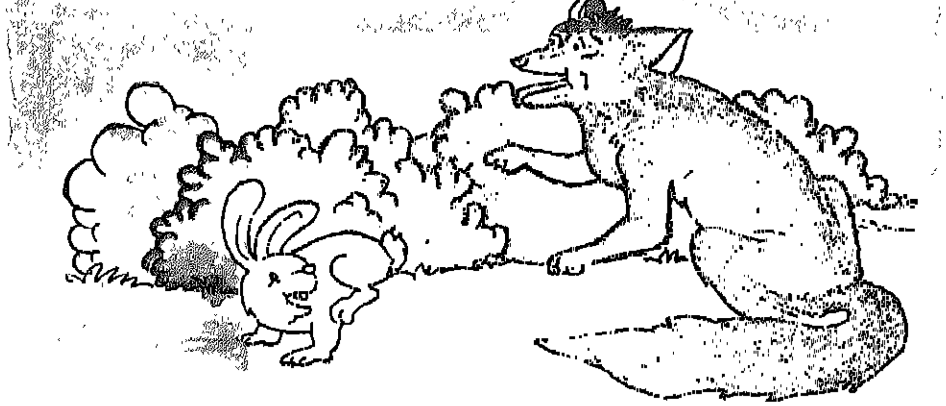
एक खरगोश था। वह पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक ज़ोर की आवाज़ हुई - धम्म। खरगोश उठ गया। वह बोला, "अरे, क्या गिरा?"

खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा आसमान गिर रहा है। खरगोश डर गया और भागने लगा।



भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली। उसने पूछा, "खरगोश भाई, कहाँ भागे जा रहे हो? ज़रा सुनो तो।"

अध्यापन संकेत : जंगली जानवरों के नाम पूछें। छोटे-बड़े जानवरों के बारे में बात करें। अभिनयात्मक ढंग से कहानी सुनाएँ। बीच-बीच में प्रश्न पूछकर बच्चों का ध्यान कहानी में बनाए रखें। प्रश्नों द्वारा कहानी का मुख्य भाव-किसी की कही हुई बात को सुनकर ही सच नहीं मान लेना चाहिए, किसी बात के बारे में पूरी जानकारी लेकर ही उस पर विश्वास करना चाहिए, निकलवाएँ। **म्म** और **म्ह** संयुक्त व्यंजनों से बनने वाले शब्दों को अभ्यास कार्य में करवाकर कुछ अन्य शब्दों को कार्डों से पढ़वाएँ। जानवरों के मुखौटे बनवाएँ और कहानी का अभिनय करवाएँ।



खरगोश भागते-भागते बोला, "आसमान गिर रहा है, भागो! भागो! जल्दी भागो!"

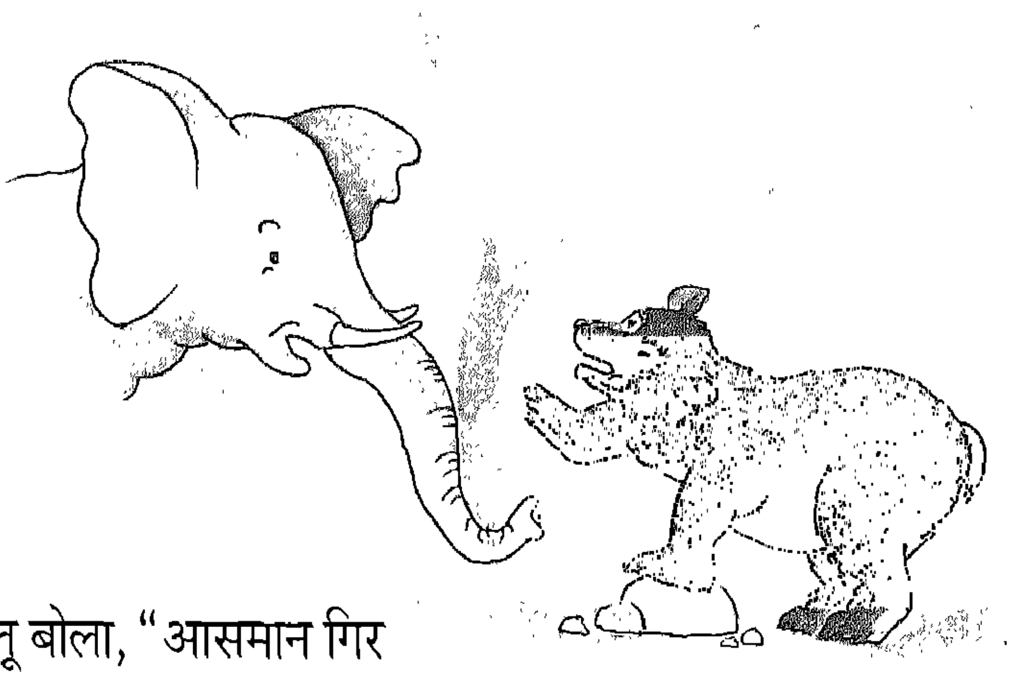
लोमड़ी भी भागने लगी। आगे जाकर उन्हें एक भालू मिला। भालू बोला, "ठहरो, ठहरो! कहाँ भागे जा रहे हो?"

खरगोश और लोमड़ी बोले, "भागो! तुम भी भागो। आसमान गिर रहा है!"

भालू भी उनके साथ भागने लगा।

खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले। हाथी बोला, "अरे! सब क्यों भागे जा रहे हो? ठहरो, कुछ बताओ तो।"





भालू बोला, "आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो।" हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे - आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमड़ी, उसके पीछे भालू और सबके पीछे हाथी।

भागते-भागते उन्हें शेर मिला। उसने पूछा, "तुम सब क्यों भागे जा रहे हो?"

हाथी बोला, "आसमान गिर रहा है। तुम भी भागो।"

शेर ने दहाड़ कर कहा, "आसमान गिर रहा है, कहाँ गिर रहा है? रुको।" यह सुनकर सभी जानवर रुक गए।

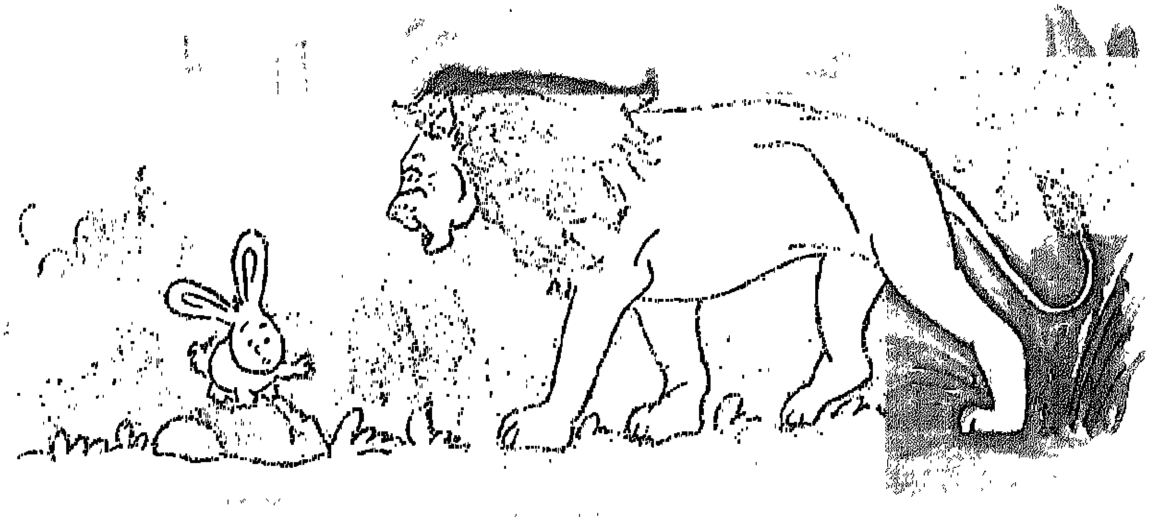
शेर ने पूछा, "किसने कहा आसमान गिर रहा है?"

हाथी बोला, "भालू ने कहा।"

भालू बोला, "मुझसे तो लोमड़ी ने कहा।"

लोमड़ी बोली, "मुझसे तो खरगोश ने कहा था। सबसे पहले इसी ने कहा था।"

खरगोश चुप रहा।

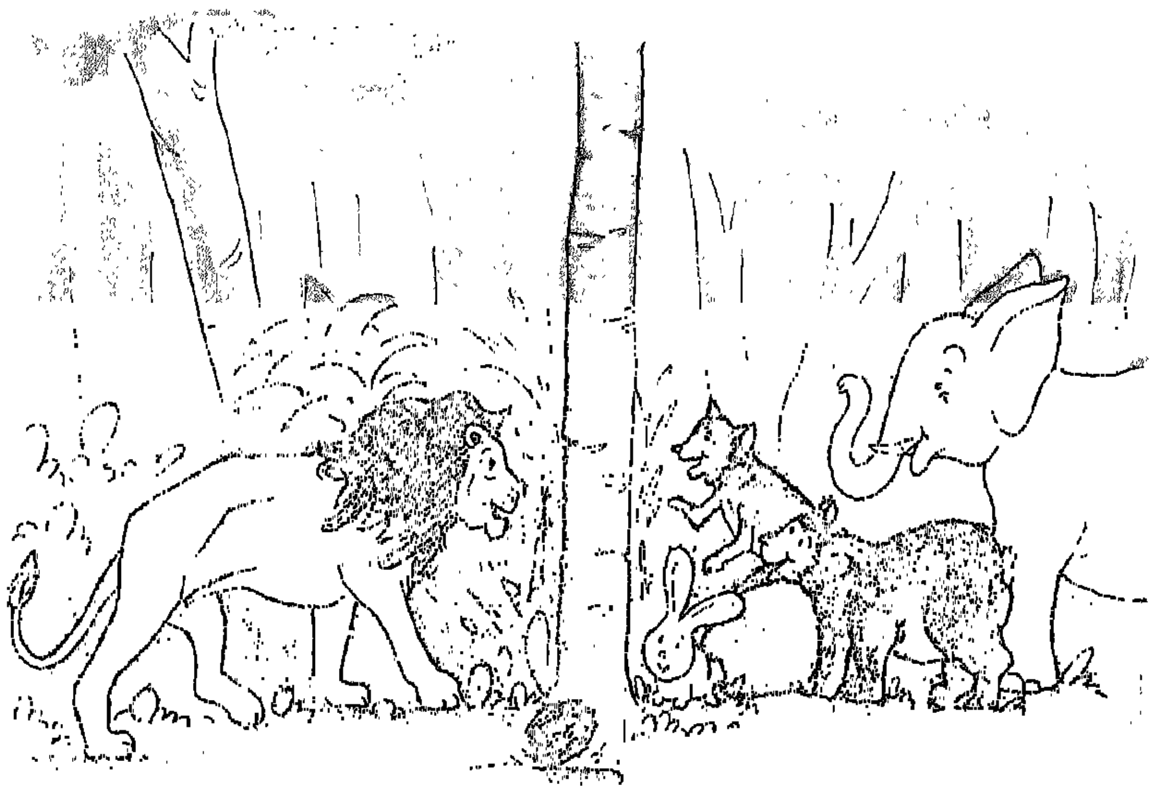


शेर बोला, "कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान?"

खरगोश ने कहा, " मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।"

शेर ने कहा, "चलो, चलकर देखें।"

वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा। वहाँ एक बड़ा-सा फल गिरा पड़ा था। तभी वैसा ही एक और फल गिरा – धम्म। खरगोश चौंक गया।



शेर बोला, "तो यही था तुम्हारा आसमान? लो फिर आसमान गिरा। भागो।"

और सभी हँसने लगे।

बताओ

(क) धम्म की आवाज़ सुनकर खरगोश क्यों भागा?

(ख) खरगोश के पीछे कौन-कौन भागा?

(ग) शेर ने जानवरों से क्या पूछा?

(घ) पेड़ के नीचे पहुँचकर जानवरों ने क्या देखा?

पहले क्या हुआ? फिर क्या हुआ? उसके बाद क्या हुआ?

☐ खरगोश धम्म की आवाज़ सुनकर भागने लगा?

☐ शेर बोला, "तो यही था तुम्हारा आसमान?"

☐ खरगोश के पीछे लोमड़ी, भालू और हाथी भागने लगे।

☐ शेर ने पूछा, "किसने कहा, आसमान गिर रहा है?"

☐ खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था।

☐ तभी वैसा ही एक और फल गिरा।

पढ़ो और समझो

धम्म	अम्मा	हिम्मत	म्	+	म	=	म्म
गुब्बारा	धब्बा	डिब्बा	ब्	+	ब	=	ब्ब
तुम्हारा	तुम्हें	कुम्हार	म्	+	ह	=	म्ह

पढ़ो, समझो और लिखो

मेरा	मेरी	मेरे
हमारा	______	______
तुम्हारा	______	______

करो

(क) इस कहानी में आए जानवरों के मुखौटे बनाओ।

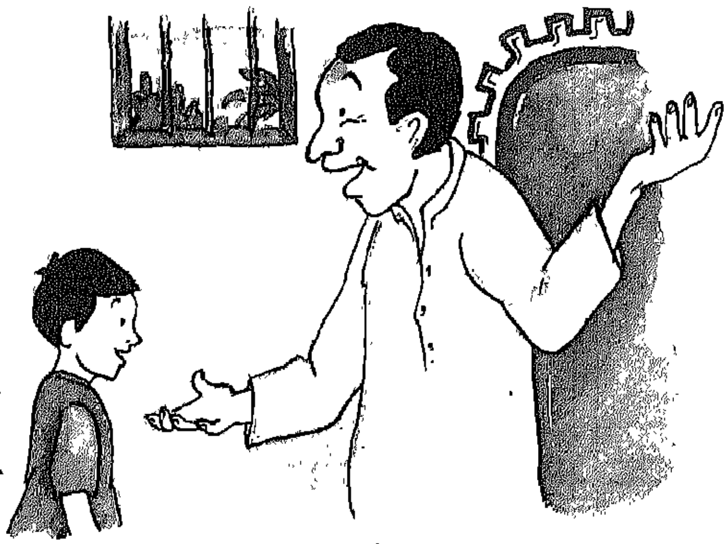
(ख) मुखौटे पहनकर बालसभा में इस कहानी का अभिनय करो।

11. साथी की सहायता

उम्र ग्यारह रुपए सहायता

साथियों खर्च चित्तरंजन देशबंधु

एक बालक था। उसकी उम्र ग्यारह वर्ष थी। एक दिन वह अपने पिता जी के पास गया और बोला, "पिता जी! मुझे पाँच-सात रुपए दे दीजिए।"



पिता जी ने कहा, "पाँच-सात रुपए! तुम ये रुपए किसलिए माँग रहे हो?"

बालक बोला, "मुझे इन रुपयों की ज़रूरत है।"

पिता जी ने बालक को पाँच रुपए दे दिए। लेकिन वे जानना चाहते थे कि बालक रुपए किस काम में खर्च करेगा। वे चुपचाप उसके पीछे चल पड़े।

अध्यापन संकेत : पाठ के नए शब्द श्यामपट पर लिखकर पढ़वाएँ। पाठ में र के दो रूपों का प्रयोग कई बार हुआ है, जैसे - उम्र, प्रसन्न, वर्ष, खर्च आदि। इन्हें श्यामपट पर लिखकर बार-बार पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाइए : ज़रूरत के समय लोगों की सहायता करनी चाहिए। अन्य महापुरुषों की घटनाएँ सुनाएँ और उन्हें पढ़ने को प्रेरित करें।



बालक सीधा अपने साथी के घर गया। वह उसे बुला लाया। फिर दोनों बाज़ार की ओर चल पड़े। पिता जी भी उनके पीछे-पीछे गए।

बाज़ार में पुस्तकों की एक दुकान थी। वहाँ दोनों रुक गए। बालक ने कुछ पुस्तकें खरीदीं और अपने साथी को दे दी। साथी को इन पुस्तकों की बहुत ज़रूरत थी।

पिता जी सब कुछ समझ गए। वे प्रसन्न थे कि उनके बेटे ने अपने साथी की मदद की।

पिता जी ने बालक को बुलाया। वे प्यार से बोले, " बेटा, तुमने बहुत अच्छा काम किया है। साथियों की सहायता करना बहुत अच्छी बात है। मैंने तुम्हें पुस्तकें खरीदते देख लिया था।"

इस बालक का नाम था - चित्तरंजन दास। चित्तरंजन दास ने देश की बहुत सेवा की। लोग इन्हें देशबंधु चित्तरंजन दास कहने लगे।

बताओ

(क) बालक का नाम क्या था?
(ख) पिता जी बालक के पीछे-पीछे क्यों गए?
(ग) बालक ने अपने साथी की सहायता कैसे की?
(घ) पिता जी प्रसन्न क्यों थे?

पढ़ो, समझो और लिखो

पुत्र	बेटा	बालक	———
साथी	———	वर्ष	———
पुस्तक	———	सहायता	———

खाली स्थान भरो

साथी **सहायता** **बाज़ार** **पुस्तक**

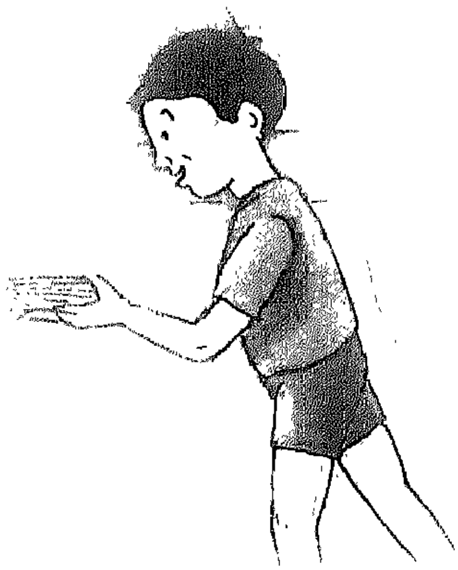
(क) मेरे ——————— का नाम मोहन है।
(ख) ——————— में कई चीज़ें बिकती हैं।
(ग) राजन ने कहानी की ——————— खरीदी।
(घ) हमें सबकी ——————— करनी चाहिए।

पढ़ो और लिखो

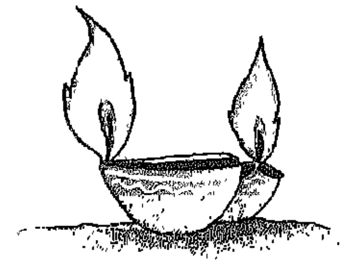
उम्र	नम्र	चक्र	____________
नमस्ते	बस्ता	पुस्तक	____________
ग्यारह	योग्य	भाग्य	____________

पढ़ो और समझो

रुपया	रुपए	रुपयों से
भेड़िया	भेड़िए	भेड़ियों ने
पहिया	पहिए	पहियों को



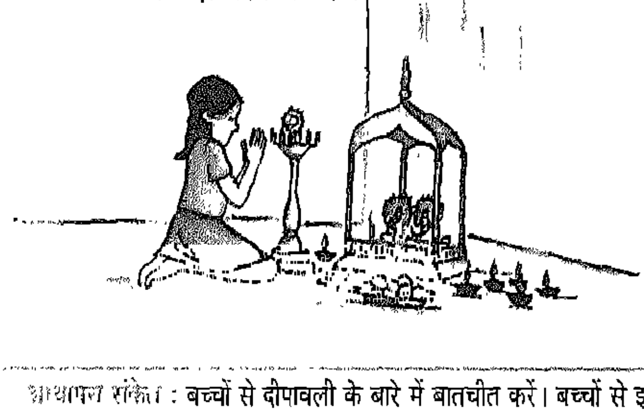
12. दीप जलाओ



दीप जलाओ, दीप जलाओ
आज दीवाली रे
खुशी-खुशी सब हँसते आओ
आज दीवाली रे।

मैं तो लूँगा खील-खिलौने
तुम भी लेना भाई
नाचो गाओ खुशी मनाओ
आज दीवाली आई।

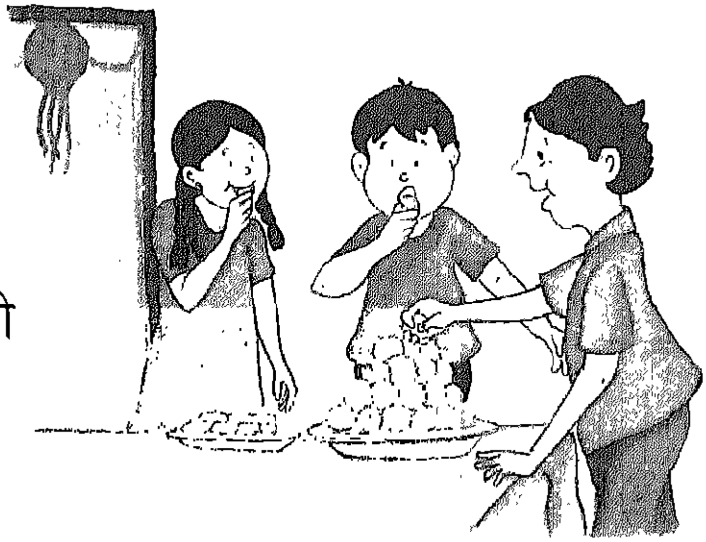
फुलझड़ियाँ अब खूब छुड़ाओ
आज दीवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दीवाली रे।



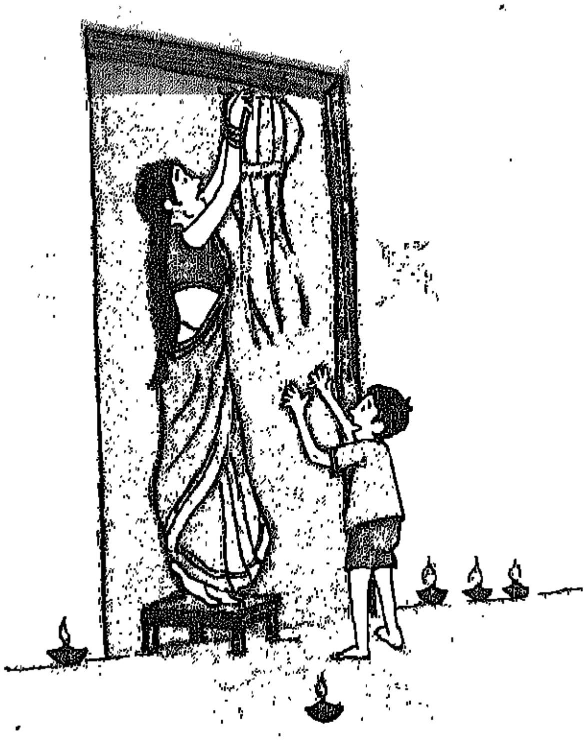
नए-नए मैं कपड़े पहनूँ
खाऊँ खूब मिठाई
हाथ जोड़कर पूजा कर लूँ
आज दीवाली आई।

अध्यापन संकेत : बच्चों से दीपावली के बारे में बातचीत करें। बच्चों से इस त्योहार के बारे में अपने अनुभव सुनाने को कहें। लय और तान के साथ कई बार कविता-पाठ करें। बच्चों से कविता गाकर सुनाने को कहें। बच्चे कक्षा की सफ़ाई करें, सजाएँ, बत्तियाँ बनाएँ, दीप जलाएँ। बधाई कार्ड बनाकर अपने साथियों को भेजें। चार्ट-पेपर से काटकर, सुनहरे कागज़ की बत्ती लगाकर दीप, मोमबत्ती और कंडील बनवाएँ।

खाओ मित्रो खूब मिठाई
आज दीवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दीवाली रे।



आज दुकानें खूब सजी हैं
घर भी चमचम करते
जगमग-जगमग दीप जले हैं
कितने अच्छे लगते।



आओ, आओ खुशी मनाओ
आज दीवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दीवाली रे।

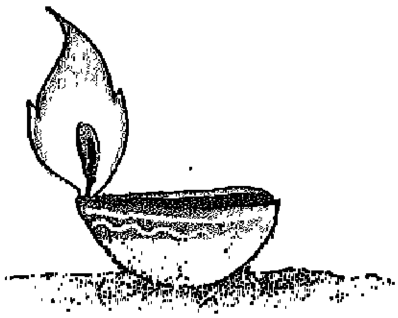
बताओ

(क) यह कविता किसके बारे में है?

(ख) दीवाली के दिन क्या-क्या करते हैं?

करो

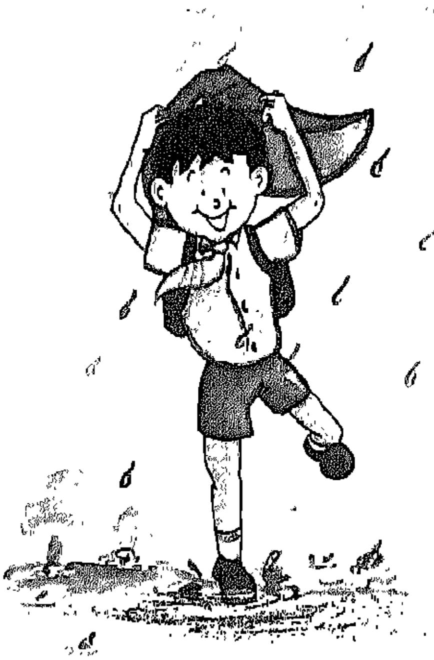
पाठशाला में सभी साथी मिलकर दीवाली मनाओ।



13. बादल

बूँदें वर्षा समुद्र प्रश्न भाप
सूर्य ठंड रसोईघर तुरंत केतली

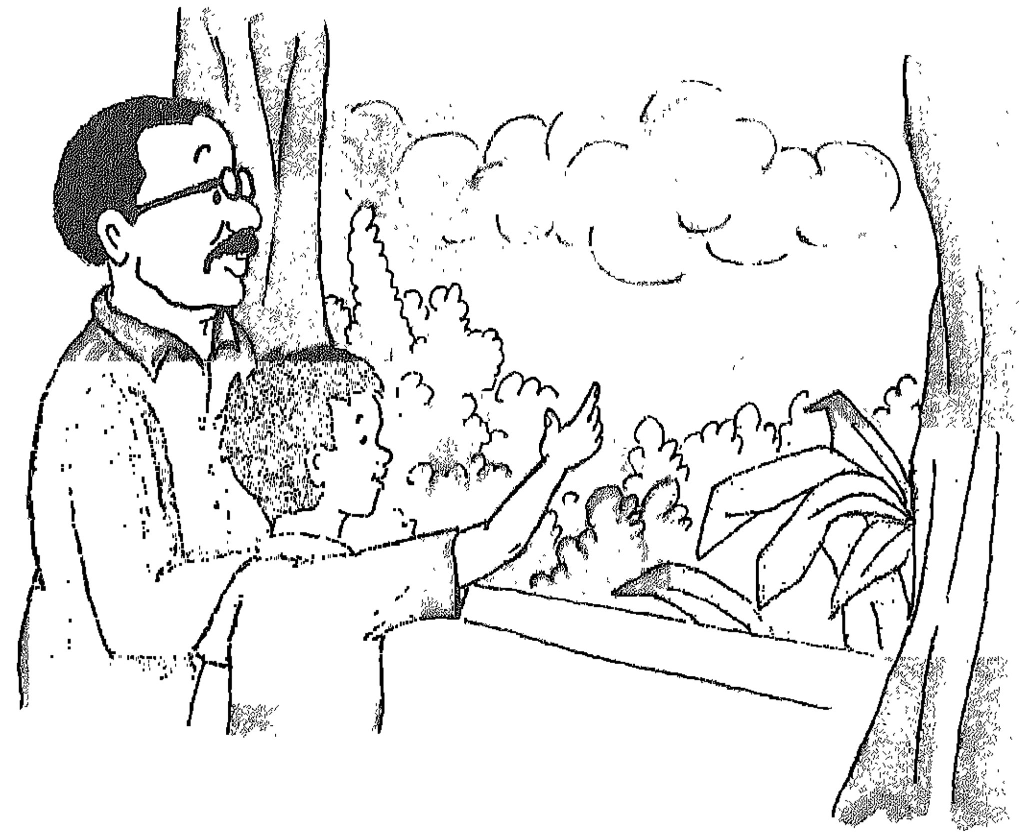
एक दिन भरत पाठशाला से घर आ रहा था। आसमान में बादल छाए हुए थे। घर अभी कुछ दूर था। इतने में बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। भरत भागता हुआ घर पहुँचा। फिर भी वह भीग गया था।



भरत को देखते ही पिता जी बोले, "जाओ, कपड़े बदल लो, नहीं तो सरदी लग जाएगी।"

कपड़े बदलते हुए भरत सोचने लगा - आसमान में पानी कहाँ से आता है? बादल आने पर ही वर्षा क्यों होती है? उसने

अध्यापन संकेत : यह पाठ विज्ञान से संबंधित है। इसमें बादलों के बनने और वर्षा होने की प्रक्रिया का वर्णन है। पाठ शुरू करने से पहले बच्चों से बादलों और वर्षा के संबंध में बातचीत करें। अपनी ओर से वर्षा होने की पूरी प्रक्रिया को सरल ढंग से समझाएँ। पूरा पाठ धीरे-धीरे पहले स्वयं पढ़ें। वाक्य प्रयोग द्वारा कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें। चर्चा द्वारा विषय को सरल बनाएँ। बच्चों से पाठ का सस्वर वाचन करवाएँ। बादल और वर्षा पर कोई कविता सुनें और सुनाएँ। आसमान में बादल कई रूपों में दिखाई देते हैं। बच्चों को उन्हें देखने और उनका आनंद उठाने के लिए प्रेरित करें।



सोचा, पिता जी से पूछना चाहिए। वह कपड़े बदलकर पिता जी के पास गया।

भरत ने पूछा, " पिता जी, वर्षा का पानी कहाँ से आता है?"

"बादलों से।" पिता जी ने बताया।

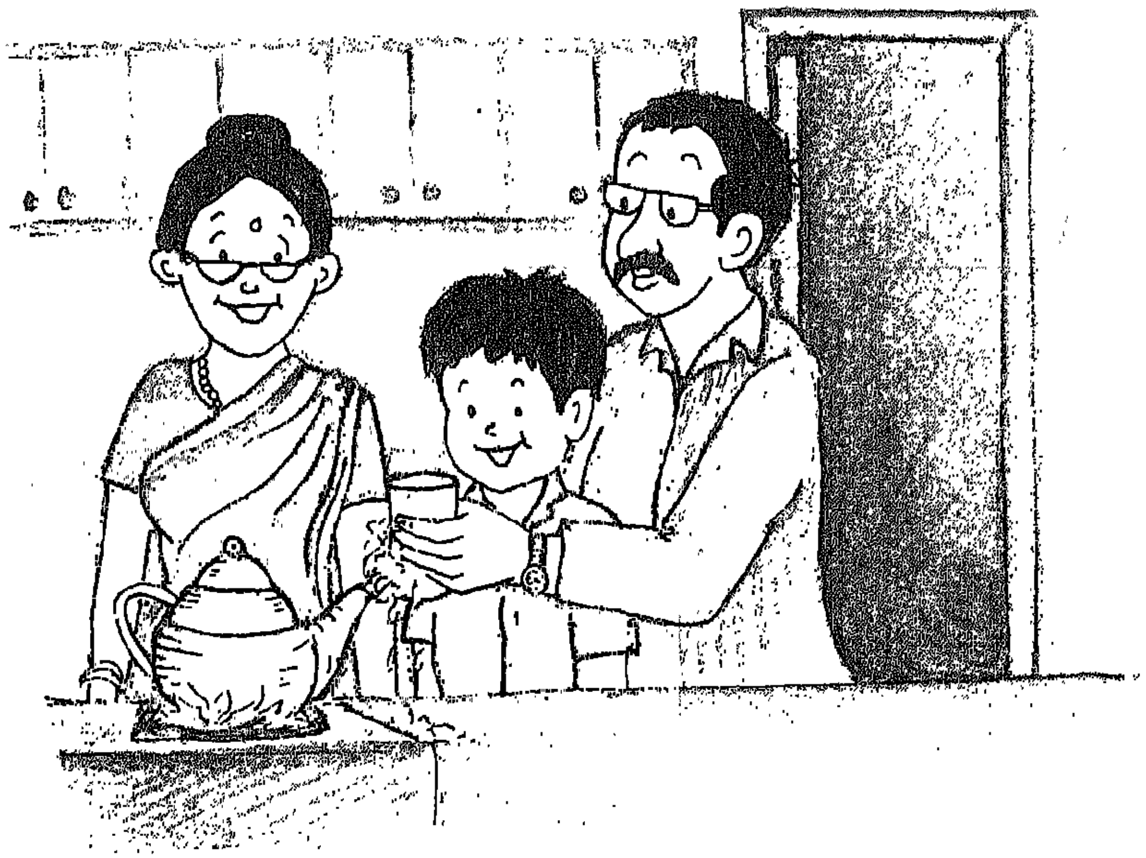
भरत ने फिर पूछा, "लेकिन बादलों में इतना पानी कहाँ से आता है?"

पिता जी ने समझाते हुए कहा, "बेटा, तालाबों, नदियों और समुद्रों में पानी होता है। सूर्य की तेज़ गरमी से यही पानी भाप में बदल जाता है। फिर भाप आसमान में जाकर बादल बन जाती है।"

भरत ने प्रश्न किया, " पिता जी, भाप बादल कैसे बन जाती है?"

पिता जी ने उत्तर दिया, "भाप हवा से हलकी होती है। हलकी होने के कारण यह ऊपर उठती है। ऊपर होती है ठंड। ठंड से ही भाप फिर से पानी की बहुत ही नन्हीं-नन्हीं बूँदों का रूप ले लेती है। बादल ऐसी ही नन्हीं-नन्हीं बूँदों का समूह है।"

पिता जी भरत को रसोईघर में ले गए। वहाँ माँ चाय बना रही थी। चूल्हे पर केतली रखी थी। केतली के मुँह से भाप निकल रही थी। भाप ऊपर की ओर उठ रही थी।



पिता जी ने ठंडे पानी से भरा एक गिलास उठाया। इस गिलास को वे भाप के पास ले गए। कुछ देर गिलास को वहीं पकड़े खड़े रहे।

भरत ने देखा - गिलास पर से पानी की बूँद टपक रही है। भरत सब कुछ समझ गया। वह बहुत खुश था।

बताओ

(क) भरत क्यों भीग गया था?

(ख) भाप कैसे बनती है?

(ग) भाप ऊपर क्यों उठती है?

(घ) पिता जी भरत को रसोईघर में क्यों ले गए?

वाक्य पूरे करो

भाप   बूँदों   बादल   पानी

(क) बादलों में इतना ______________ कहाँ से आता है?

(ख) सूर्य की गरमी से पानी ______________ बन जाता है?

(ग) ______________ पानी बरसाते हैं।

(घ) बादल नन्हीं-नन्हीं ______________ का समूह है।

पढ़ो और लिखो

चूल्हा	कुल्हाड़ी	दूल्हा	वर्षा	सूर्य	हर्ष
प्रेम	प्रश्न	व्रत	नन्हीं	इन्हें	उन्हें

पढ़ो और समझो

पंख = पङ्ख
चंचल = चञ्चल
ठंड = ठण्ड
तुरंत = तुरन्त
पंप = पम्प
सुंदर = सुन्दर
आनंद = आनन्द
रंजन = रञ्जन
बंधु = बन्धु
मंजन = मञ्जन





14. साहसी बालक

पूर्णचंद्र बस्ती प्रतिदिन झोंपड़ियाँ
लट्ठे जनवरी साहसी इनाम

पूर्णचंद्र का घर एक घनी बस्ती में था। वह प्रतिदिन बस्ती की पाठशाला में पढ़ने जाया करता था। उसे पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। वह पाठशाला से आकर थोड़ा खेलता और फिर पढ़ने बैठ जाता।



आज पाठशाला में पूर्णचंद्र खेलते-खेलते बहुत थक गया था। उसने सोचा – खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा, फिर पढ़ूँगा।

पूर्णचंद्र थका हुआ तो था ही, जैसे ही चारपाई पर लेटा उसे गहरी नींद आ गई। नींद में उसे कुछ लोगों के भागने और

अध्यापन संकेत : पूर्णचंद्र, लट्ठे, बस्ती, बाँस, फूस, झोंपड़ी - शब्दों को श्यामपट पर लिखें, इनका उच्चारण करवाएँ और अर्थ स्पष्ट करें। इंद्र-सुंदर, चंद्र-मंदिर जैसे शब्दों के उदाहरणों द्वारा (द्र) (द् र) और (दर) के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। बंद और बन्द, चंद्र और चन्द्र की तरह के अन्य जोड़े श्यामपट पर लिखकर बताएँ कि ये दोनों ही ठीक हैं लेकिन आजकल इन्हें बिंदु के साथ ही लिखा जाता है। मिलते-जुलते क्रियापदों, जैसे – करूँगा, पढ़ूँगा, खेलूँगा आदि पर ध्यान दिलाएँ और वैसे ही अन्य क्रियापद बताने को कहें। बच्चों को अपने जीवन या परिचित व्यक्तियों के जीवन के साहसिक अनुभव सुनाने को प्रोत्साहित करें।

चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। वह घबराकर उठ बैठा। सचमुच लोग चिल्ला रहे थे।

"आग! आग!"

"आग! आग! बस्ती में आग लग गई है।"

पूर्णचंद्र भागा-भागा बाहर आया। उसने इधर-उधर देखा, लोग एक ओर भागे जा रहे थे। पूर्णचंद्र भी उधर ही भागने लगा।

उसने देखा, कई झोंपड़ियों और मकानों में आग लगी हुई थी। आग पूर्णचंद्र की पाठशाला की ओर बढ़ रही थी। इतने में पाठशाला की छत पर एक जलती हुई लकड़ी आ गिरी।



पाठशाला का दरवाज़ा बंद था। उस पर ताला लगा हुआ था। पूर्णचंद्र ने कुछ सोचा। वह झट बाँस के लट्ठे के सहारे छत पर चढ़ गया।

फूस की छत तेज़ी से आग पकड़ रही थी। पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस फेंक दिया।

लोगों ने फूस पर पानी डाला। आग बुझ गई। पूर्णचंद्र ने अपनी पाठशाला को जलने से बचा लिया।

इतने में आग बुझानेवाले भी आ गए। जगह-जगह पानी डालकर उन्होंने बस्ती में लगी आग बुझा दी।

भारत सरकार ने 26 जनवरी को साहसी बालक पूर्णचंद्र को इनाम दिया।

किसने कहा, क्यों कहा?

(क) खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा।

(ख) आग! आग! बस्ती में आग लग गई।

बताओ

(क) पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस नीचे क्यों फेंक दिया?

(ख) सरकार ने पूर्णचंद्र को इनाम क्यों दिया?

(ग) पूर्णचंद्र कैसा लड़का था?

पढ़ो और समझो

लट्ठा	चिट्ठी	इकट्ठा	ट् + ठ = ट्ठ
चन्द्र	इन्द्र	पन्द्रह	न् + द् + र = न्द्र
चंद्र	इंद्र	पंद्रह	

वाक्य बनाओ

प्रतिदिन गहरी साहसी इनाम झोंपड़ी

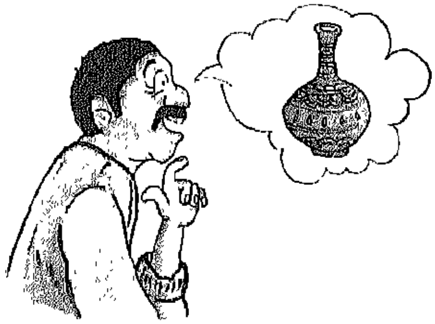
पढ़ो और लिखो

पूर्णचंद्र	बस्ती	शौक	चारपाई	झोंपड़ियाँ
साहसी	इनाम	राजेंद्र	इकट्ठा	बस्ता

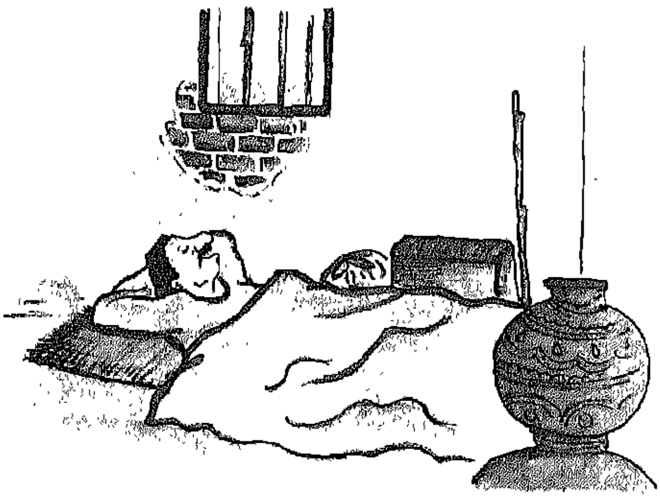


15. सबकी सुराही

सुराही मज़बूत कुम्हार कीचड़ बेल-बूटे



एक थी सुराही। बहुत सुंदर, बहुत मज़बूत । उस पर सुंदर-सुंदर बेल-बूटे बने थे। भीमा सुराही को बार-बार देखता और खुश होता।



वह सोचने लगा - मेरी मेहनत से ही यह सुराही इतनी सुंदर बनी है। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। वह सपना देखने लगा। सुराही

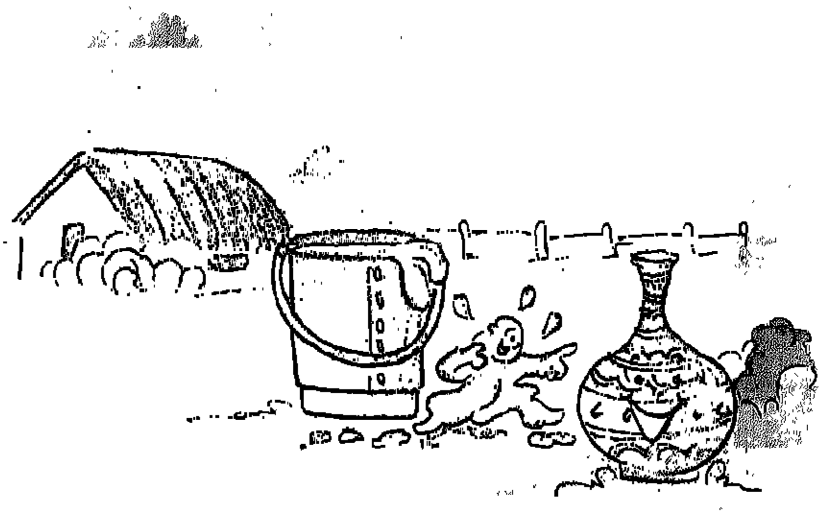
अध्यापन संकेत : यह पाठ गद्य और पद्य की मिली-जुली शैली में है। पहले इसे स्वयं पढ़ें, फिर बच्चों से अभिनयात्मक ढंग से पढ़वाएँ। बच्चे - कुम्हार, मिट्टी, पानी, चाक, आग और सुराही पात्र बनकर पढ़ें। कुम्हार, बेल-बूटे, चाक, मिट्टी आदि के बारे में बात करें। सुराही या घड़ा कैसे बनाया जाता है – इसकी पूरी प्रक्रिया बच्चों को बताएँ। मिट्टी-मिटी, पक्का-पका, बच्चा-बचा शब्दों को श्यामपट पर लिखकर दोनों के उच्चारण और अर्थ के अंतर पर ध्यान दिलाएं। सुंदर-सुंदर दो बार लिखने का मतलब है बल देना अर्थात् बहुत सुंदर । अभ्यास में दिए गए इसी प्रकार के शब्दों को पढ़वाएँ और वाक्य बनवाएँ। चर्चा के माध्यम से उभारें - मिलजुल कर काम करने से काम अच्छा होता है। बच्चों से मिट्टी के बरतन बनवाएँ।

के पास पड़ी मिट्टी हिली और कहने लगी –
"सुराही सुराही मैंने तुम्हें बनाया
सुंदर रूप तुम्हारा मुझसे ही है आया।"

मिट्टी ने जब बार-बार यह कहना शुरू किया, तब पास ही रखी हुई बालटी का पानी छलका। वह कहने लगा –



"मिट्टी रानी मिट्टी रानी मेहनत सारी मेरी
मैंने इसे बनाया तुम थी धूल की बस ढेरी।"



मिट्टी और पानी की बातें सुनकर भीमा कुम्हार का चाक चुप न रह सका। वह बोला –

"तुम दोनों थे कीचड़-मिट्टी इस सच को लो जान
बनी सुराही मेरे कारण बात यही लो मान"

मिट्टी, पानी और चाक की बातें सुनकर बुझती आग भी जोश में आकर कहने लगी –

"तुम सब बातें कच्ची करते कच्चा काम तुम्हारा
तप कर मुझमें बनी सुराही असली काम हमारा।"

भीमा कुम्हार ने सबकी बातें सुनीं। वह बोला, "सब चुप हो जाओ, चलो सुराही से पूछते हैं, उसे किसने बनाया।"



सुराही ने जब यह सवाल सुना, वह बोली –
"किसी एक का काम नहीं यह सबकी मेहनत सबका काम
मिलजुल कर सब कर सकते हैं अच्छे-अच्छे, सुंदर काम।"

बताओ

(क) सुराही कैसी थी?

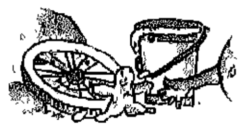
(ख) चाक ने क्यों कहा - सुराही मेरे कारण बनी है ?

(ग) आग ने सुराही बनाने में क्या मदद की?

(घ) सुराही ने क्या कहा?

पढ़ो और समझो

सुंदर-सुंदर	पीछे-पीछे
बार-बार	हरी-हरी
ज़ोर-ज़ोर	धीरे-धीरे



वाक्य बनाओ

कुम्हार	पर	सबकी बातें सुनीं।
	को	सुंदर बेल-बूटे बने थे।
सुराही	ने	सबने मिलकर बनाया था।
	का	नाम भीमा था।

करो

मिट्टी से खिलौने बनाओ।



16. चाँद का कुरता

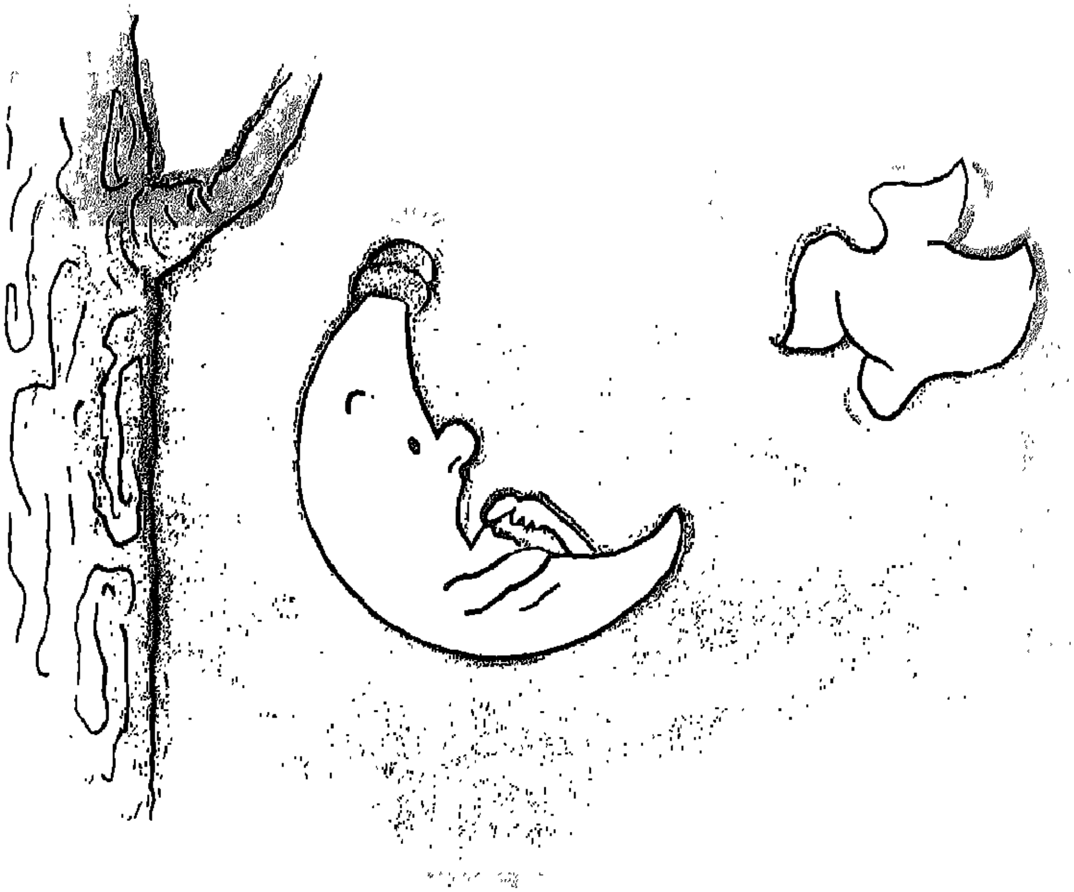
चाँद **झिंगोला** **ठिठुर** **यात्रा**
भाड़े **सलोने** **अंगुल**

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
"सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।



सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

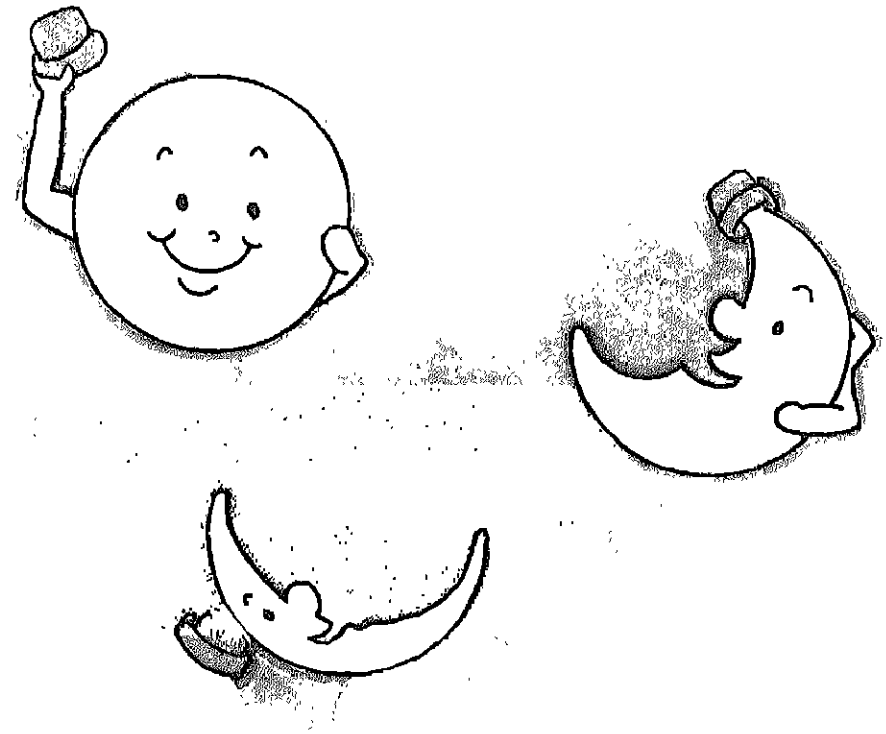
अध्यापन संकेत : चर्चा करें कि हम कपड़े क्यों पहनते हैं? तुम नए कपड़े लेने के लिए किससे कहते हो? चाँद आसमान में रातभर घूमता है, क्या उसे भी कपड़ों की ज़रूरत पड़ती होगी? कपड़े सिलवाने के लिए वह किससे कहेगा? क्या माँ उसे कुरता या झिंगोला सिलवा देगी? लय और तान के साथ कविता को धीरे-धीरे पढ़ें, जिससे अर्थ स्वयं ही स्पष्ट हो जाए। बच्चे साथ-साथ कविता बोलें, याद करें और सुनाएँ। चाँद के घटते-बढ़ते आकार को देखने के लिए प्रेरित करें। श्यामपट पर चाँद का अलग-अलग आकार बनाकर भी दिखाएँ। बच्चों से चाँद के अलग-अलग आकार बनवाएँ।



आसमान का सफ़र और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का।"

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, "अरे सलोने!"
कुशल करें भगवान, लगे मत तुझको जादू टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।



कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ बदन में आए?"

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

बताओ

(क) चाँद ने माँ से क्या कहा?

(ख) माँ ने चाँद को क्या उत्तर दिया?

पढ़ो और समझो

हठ	=	ज़िद्द
झिंगोला	=	झबला, कुरते जैसा दिखनेवाला एक ढीला वस्त्र
सन-सन	=	हवा चलने की आवाज़
ठिठुर-ठिठुर	=	सरदी से सिकुड़ना/काँपना
यात्रा	=	सफ़र
भाड़े	=	किराए
सलोने	=	सुंदर

करो

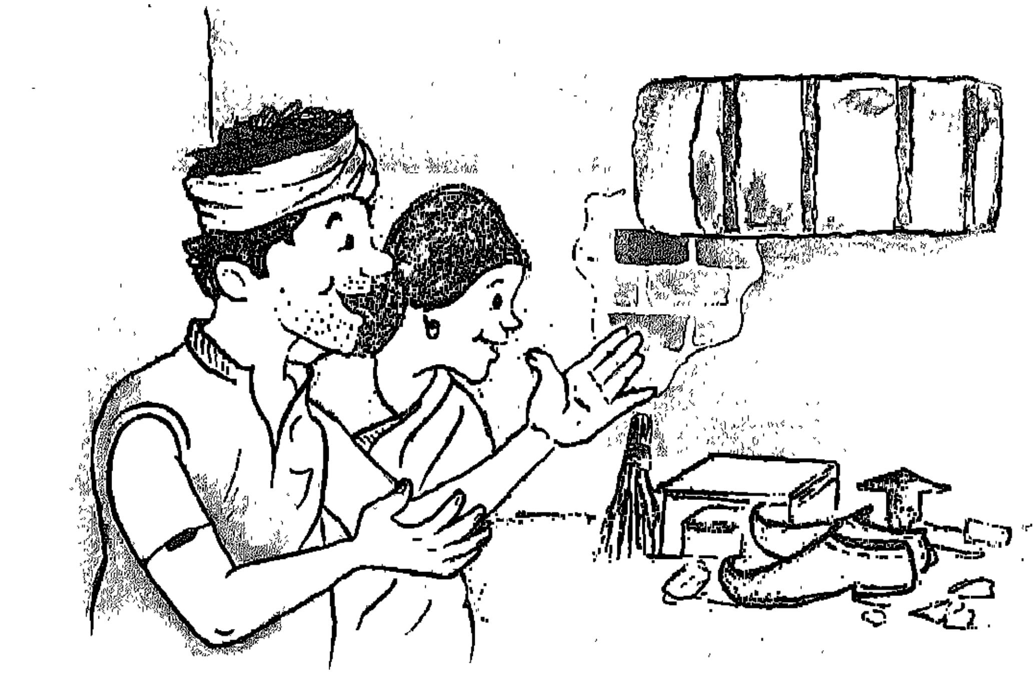
इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।



17. मोची और बौने

पत्नी　दुकान　चमड़ा　अँधेरा　बौने　खिड़की

एक मोची और उसकी पत्नी अपनी दुकान के पीछे रहते थे। मोची बहुत अच्छे जूते बनाता था। उसके पास पैसे बहुत कम थे। इसलिए वह एक जोड़ा जूते के लिए ही चमड़ा लाता था।



अध्यापन संकेत : कहानी को रोचक ढंग से सुनाएँ। बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर निश्चित करें कि वे ध्यान से कहानी सुन रहे हैं। दूसरों की मदद करने से सभी को खुशी मिलती है – इस भाव को निकलवाएँ और चर्चा करें। बच्चों को अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहें। कहानी का अभिनय करवाएँ। ज़, फ़, ड़-ढ़, श-स के शुद्ध उच्चारण पर बल दें। श्यामपट या कार्डों की सहायता से अभ्यास कराएँ।

एक दिन काम करते-करते अँधेरा हो गया। मोची ने जूते बनाने के लिए चमड़ा काटकर रख दिया। फिर वह घर चला गया।

अगले दिन मोची दुकान में आया। मोची ने अपनी पत्नी से कहा, "अरे ! ये जूते। शाम को तो मैंने चमड़ा काटकर ही रखा था। देखो, रात में ऐसे सुंदर और मज़बूत जूते किसने बना दिए।"

"कितने सुंदर जूते हैं।" उसकी पत्नी बोली।

तभी दुकान पर एक आदमी आया। उन जूतों को देखकर बोला, "ये जूते बड़े सुंदर हैं। मुझे दे दो, भाई।" मोची ने जूते उसे दे दिए। उसने मोची को बहुत-से पैसे दिए।



उस दिन मोची दो जोड़ी जूतों के लिए चमड़ा लाया। शाम को फिर चमड़ा काटकर वह चला गया।

अगले दिन वह दुकान में आया और बोला, "अरे ! आज भी जूते बन गए हैं। इनको कौन बना जाता है?"

उस दिन भी उसकी दुकान पर एक आदमी आया और बोला, "ये जूते बड़े मज़बूत हैं।



मुझे दे दो।" मोची ने दोनों जोड़े जूते उसे दे दिए। उस आदमी ने भी मोची को बहुत-से पैसे दिए।

अब मोची अधिक चमड़ा लाने लगा। वह शाम को चमड़ा काटकर रख देता। दूसरे दिन उसे जूते बने मिलते। जूते तुरंत बिक जाते। इस तरह उसके पास बहुत-से पैसे हो गए।

एक दिन मोची ने अपनी पत्नी से कहा, "हम आज रात को खिड़की में से देखेंगे, ये जूते कौन बना जाता है।" चमड़ा काटकर मोची अपनी पत्नी के साथ खिड़की के पीछे छिपकर बैठ गया और देखने लगा।

"देखो, देखो!' उसकी पत्नी धीरे से बोली। मोची ने देखा-दो बौने नाचते-नाचते आए और जूते बनाने लगे।



मोची की पत्नी बोली, "अच्छा! तो ये बौने ही जूते बना जाते हैं। इन दोनों ने हमारी बहुत मदद की है। मैं इनके लिए सुंदर-सुंदर कपड़े बनाऊँगी।"

"मैं इनके लिए छोटे-छोटे जूते बनाऊँगा," मोची बोला।

मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए जूते और कपड़े बनाए! शाम को उन्हें दुकान में रख दिया। फिर वे खिड़की के पीछे बैठकर देखने लगे।

रात हुई। बौने आए। "आज तो चमड़ा नहीं है," एक ने कहा।

"अरे! देखो! यह क्या? कपड़े और जूते!" दूसरे बौने ने कहा।

कपड़े और जूते पहनकर वे बहुत खुश हुए और उछलते-कूदते चले गए।

मोची और उसकी पत्नी दोनों बहुत प्रसन्न थे।



बताओ

(क) मोची और उसकी पत्नी कहाँ रहते थे?
(ख) मोची दो जोड़ी जूतों के लिए ही चमड़ा क्यों लाया?
(ग) मोची को कैसे पता चला कि जूते कौन बना जाता था?
(घ) मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए क्या-क्या बनाया?

पढ़ो और बताओ, कौन-सी बात सही है?

☐ मोची बहुत धनी था।
☐ मोची और उसकी पत्नी को बौने अच्छे लगे।
☐ मोची और उसकी पत्नी दोनों ही अच्छे थे।
☐ बौनों ने उनकी कुछ मदद नहीं की।
☐ वे भी बौनों को कुछ देना चाहते थे।

पढ़ो, समझो और लिखो

जूता	जूते
कपड़ा	______
बौना	______
दीया	दीए
रुपया	______
भेड़िया	______

पढ़ो और समझो

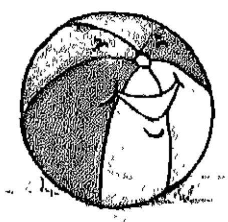
मज़बूत	रोज़	जहाज़
साफ़	सफ़ाई	सफ़ेद
पेड़	सड़क	खिड़की
दाढ़ी	सीढ़ी	पढ़ना
शहतूत	शीश	मशाल
सवेरा	बरसना	साहसी

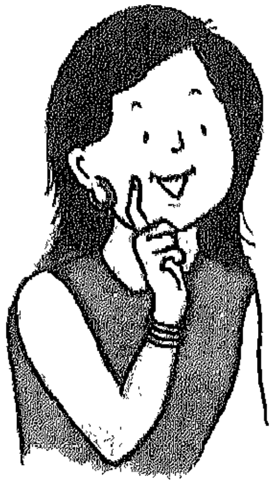


18. बूझो तो जानें

(1)

नीचे पटको ऊपर जाती
ऊपर से फिर नीचे आती
ऊँची-ऊँची कूद लगाती
गोल-गोल हूँ तुमको भाती।





(2)

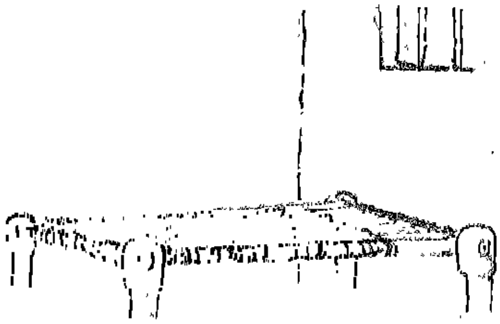
बिना पंख ही उड़ जाती
बाँध गले में डोर
खींचो तो ऊपर चढ़ जाती
रहे हाथ में छोर।

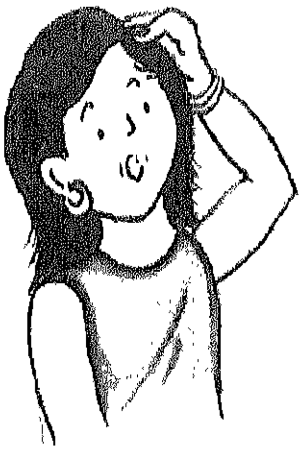


अध्यापन संकेत : ये पहेलियाँ एक-एक करके पूछिए। पहेली का सही उत्तर मिलने पर उसे श्यामपट पर लिखें। इसी प्रकार की अन्य पहेलियाँ बच्चों से आपस में बूझने को कहें।

(3)

चार पाँव पर चल न पाऊँ
बिना हिलाए हिल न पाऊँ
फिर भी सबको दूँ आराम
झटपट बोलो मेरा नाम।





(4)

तैर-तैर कर आती हो
मचल-मचल कर जाती हो
करती हो तुम मनमानी
कहलाती जल की रानी।

— जयप्रकाश भारती

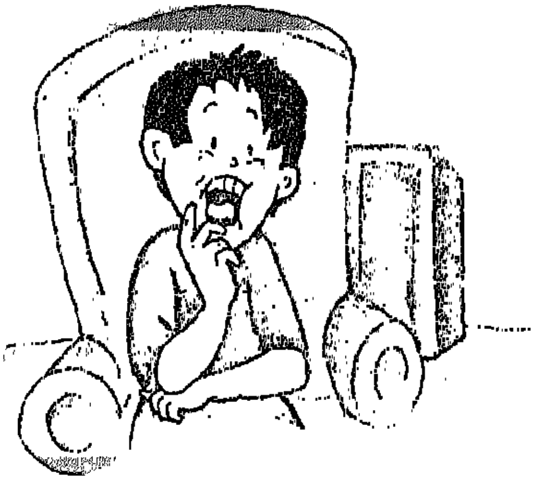






19. दाँतों की सफ़ाई

ऋषि दाँत डाक्टर दातुन बुरुश खोखला



ऋषि के दाँत में बहुत दर्द हो रहा था। वह पाठशाला भी नहीं जा सका। ऋषि की माँ उसे दाँतों के डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने ऋषि के दाँतों को देखा। वे बोले, "ऋषि बेटा, तुम्हारे दाँत तो बहुत गंदे हो रहे हैं। क्या तुम रोज़ दाँत साफ़ नहीं करते?"

ऋषि चुप रहा। माँ बोली, "हाँ, डाक्टर साहब, यह रोज़ दाँत साफ़ नहीं करता। बहुत कहने पर ही दाँत साफ़ करता है।"

अध्यापन संकेत : पाठ में आए नए शब्दों, जैसे – ऋषि, दाँत, बुरुश, डाक्टर आदि को श्यामपट पर लिखकर स्वयं उनका उच्चारण करें और बच्चों से करवाएँ। ऋ का यहाँ पहली बार प्रयोग किया गया है। ऋ को श्यामपट पर लिखकर इसका उच्चारण करवाएँ। फिर लिखने का अभ्यास दें। इससे बनने वाले शब्दों, जैसे – ऋषि, ऋतु, ऋचा, ऋण आदि को श्यामपट या कार्डों पर लिखकर पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बच्चों को दाँत साफ़ करने का सही तरीका बताएँ।

डाक्टर ने कहा, "इसके दाँत को कीड़ा लग गया है। मैं अभी दवा लगा देता हूँ। दवा से दर्द कम हो जाएगा। पर आप ध्यान रखिएगा यह रोज़ दो बार दाँत अवश्य साफ़ करे।"

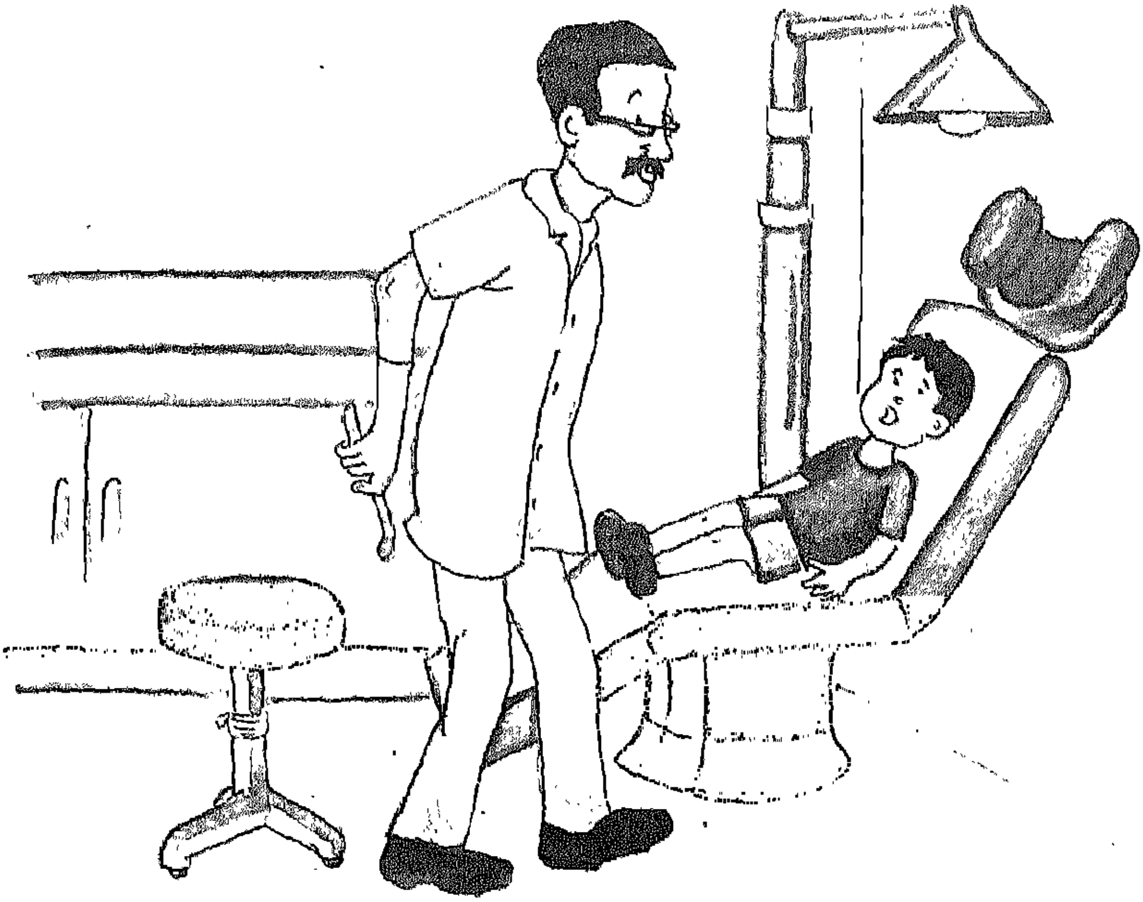


माँ बोली, "दो बार?"

डाक्टर दवा लगाते हुए बोले, "जी हाँ, दाँत दो बार ही साफ़ करने चाहिए। एक बार सुबह उठने के बाद और दूसरी बार रात को सोने से पहले। बुरुश या दातुन से दाँत साफ़ करवाइए। ऋषि को दूध भी खूब दीजिए। दूध पीना दाँतों के लिए अच्छा है।"

ऋषि बोल उठा, "अच्छा डाक्टर साहब, मैं दो बार दाँत साफ़ करूँगा और दूध भी पिया करूँगा। फिर तो मुझे दर्द नहीं होगा?"

डाक्टर बोले, "नहीं, फिर तुम्हारे दाँत में दर्द नहीं होगा। दाँत साफ़ रखने से दाँत में कीड़ा नहीं लगता। कीड़ा दाँतों को खोखला कर देता है। लो, यह लो दवा। दाँत साफ़ करते समय पानी में डाल लेना।"



ऋषि जाने लगा तो डाक्टर ने कहा, "सुनो ऋषि, एक बात का और ध्यान रखना। दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए सब्ज़ियाँ और फल खाना बहुत ज़रूरी है। इससे दाँतों की कसरत होती है और दाँत साफ़ रहते हैं।"

माँ बोली, "मैं इस बात का ज़रूर ध्यान रखूँगी। मैं इसे फल और सब्ज़ियाँ खाने को दिया करूँगी।"

दवा लगाने से ऋषि के दाँत का दर्द कुछ ठीक हो गया था। वह खुशी-खुशी वहाँ से चल पड़ा।

बताओ

(क) दाँत साफ़ न करने से क्या होता है?
(ख) डाक्टर ने ऋषि की माँ को क्या सलाह दी?
(ग) दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए क्या-क्या खाना चाहिए?
(घ) फल और सब्ज़ियाँ क्यों खानी चाहिए?

लिखो

ऋ = ʔ त्र ऋ ऋ

ऋषि ऋतु ऋचा आँख दाँत हँसना आँसू
दर्द सर्प बुरुश प्रणाम डाक्टर कंडक्टर

पढ़ो, समझो और लिखो

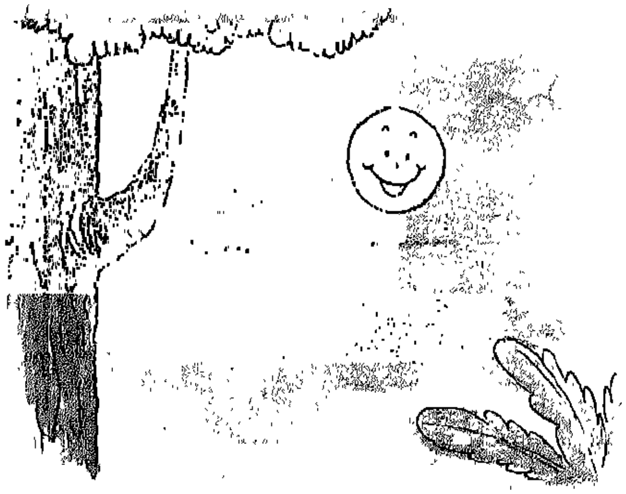
एक	अनेक	मज़बूत	कमज़ोर
शुरु	______	खुश	______
धीरे	______	साफ़	______
आगे	______	कम	______
अँधेरा	______	दिन	______

करो

नीम या कीकर की टहनी की दातुन बनाओ। उससे दाँत साफ़ करो।



20. कौन



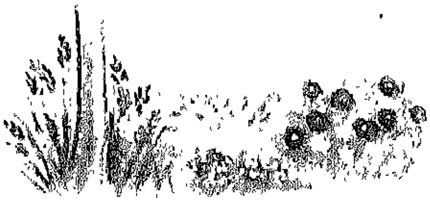
अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकाता कौन?



अगर न होतीं निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन?

अध्यापन संकेत : कविता को गाकर पढ़ें और फिर बच्चे और आप साथ-साथ गाएँ। इस कविता में प्रकृति के उपहारों का उल्लेख किया गया है। कौन वाली पंक्तियों के संबंध में प्रश्न पूछें - रात के समय रास्ता कौन दिखाता है? दिन को सोने-सा कौन चमकाता है? संसार की प्यास कौन बुझाता है? हरियाली कौन फैलाता है? इसी प्रकार अन्य पंक्तियों पर प्रश्न पूछकर कविता का भाव स्पष्ट करें। बच्चों से निकलवाएँ कि सूरज, चाँद, नदियाँ, पर्वत, पेड़, बादल आदि सभी हमें कुछ-न-कुछ देकर हमारी मदद करते हैं। हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए। अंत की दो पंक्तियों में हम शब्द बच्चों के लिए आया है।

अगर न होते पेड़ भला फिर,
हरियाली फैलाता कौन?
अगर न होते फूल बताओ
खिल-खिलकर मुसकाता कौन?



अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम तो बोलो
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

— बालस्वरूप राही



पढ़ो और समझो

निर्मल	=	साफ़	नभ	=	आसमान, आकाश
रच	=	बना	जग	=	संसार, दुनिया
पर्वत	=	पहाड़	प्रश्न	=	सवाल

चर्चा करो

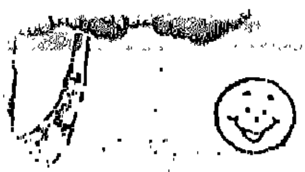
(क) आकाश में इंद्रधनुष कब दिखाई देता है?
(ख) पेड़ों से हमें क्या-क्या लाभ हैं?
(ग) सूर्य, चंद्र और बादल हमें क्या देते हैं?

पढ़ो, समझो और लिखो

पर्वतों से निकलते हैं ______________ नदियाँ और झरने
पेड़ों से मिलते हैं ______________
चाँद देता है ______________
सूरज देता है ______________
बादल देते हैं ______________

याद करो

इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।



21. हंस किसका

पक्षी	**सिद्धार्थ**	**चहचहाना**	**घायल**	**घाव**
हंस	**राजमहल**	**शिकायत**	**पट्टी**	**देवदत्त**

सुबह का समय था। बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। पक्षी चहचहा रहे थे। सिद्धार्थ बगीचे में घूम रहा था।

अचानक पक्षियों का चहचहाना बंद हो गया। उनके चीखने की आवाज़ें आने लगीं। जैसे कि पक्षी डरकर चिल्ला रहे हों।



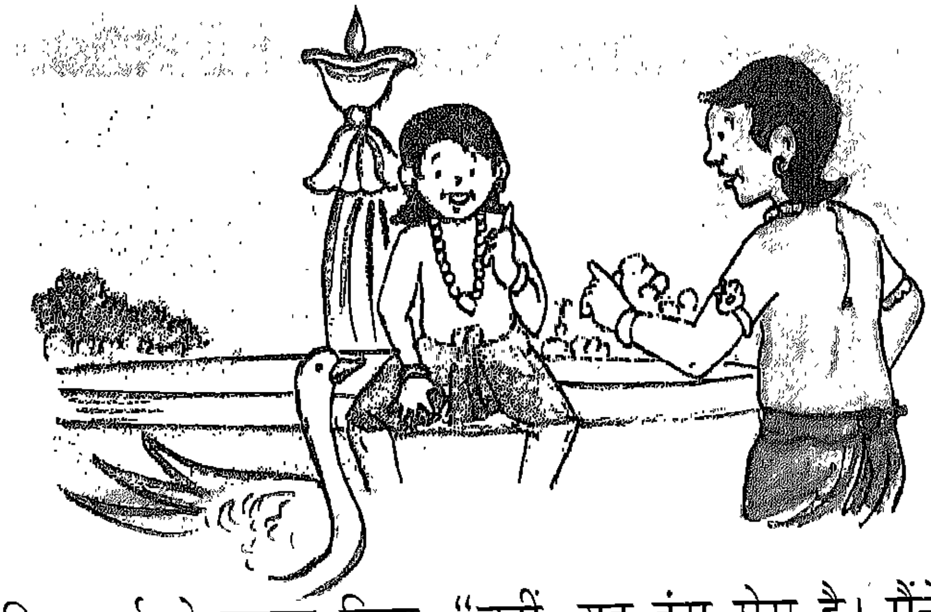
तभी एक हंस उसके पैरों के पास आ गिरा। हंस के शरीर में तीर लगा हुआ था। वह तड़प रहा था।

अध्यापन संकेत : नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखें और उनके उच्चारण करवाएँ। क्ष और द्ध वाले शब्दों को श्यामपट या फ्लैश कार्डों से पढ़वाएँ और शुद्ध उच्चारण करवाएँ। इसी प्रकार हंस और हँस शब्दों को बार-बार पढ़वाकर अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) के उच्चारण-भेद से, अर्थ-भेद को स्पष्ट करें। ध्यान दिलाएँ : हमें जीवों के साथ दया का बरताव करना चाहिए। हमें किसी प्राणी को सताना नहीं चाहिए। बच्चों को बताएँ कि सिद्धार्थ ही बड़े होकर गौतम बुद्ध कहलाए।

सिद्धार्थ ने हंस को उठाया। उसने प्यार से हंस के पंखों पर हाथ फेरा। धीरे से तीर निकाला।

सिद्धार्थ ने हंस का घाव धोया और पट्टी बाँधी। हंस का तड़पना कुछ कम हो गया। सिद्धार्थ उसे अपनी गोद में लिए रहा।

इतने में उसका भाई देवदत्त दौड़ा आया। वह बोला, "यह हंस मुझे दो। यह मेरा शिकार है।"



सिद्धार्थ ने उत्तर दिया, "नहीं, यह हंस मेरा है। मैंने इसे बचाया है।"

वह हंस को लेकर राजमहल की ओर चल दिया। देवदत्त भी सिद्धार्थ के पीछे-पीछे चला।

सामने ही राजा खड़े थे। देवदत्त ने उनसे शिकायत की, "सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं दे रहा।"

सिद्धार्थ बोला, "पिता जी, देवदत्त ने हंस को तीर मारा था। वह घायल हो गया। मैंने इसे पट्टी बाँधी। अब यह हंस मेरा है।"



देवदत्त बोला, "नहीं, नहीं। यह मेरा है, मैंने इसे तीर से गिराया है।"



सिद्धार्थ ने कहा, "लेकिन मैंने इसे बचाया है।"

राजा सोचकर बोले, "देवदत्त तुम तो इस हंस को मारना चाहते थे, पर सिद्धार्थ ने इसे बचाया है। हंस सिद्धार्थ का ही है।"

बताओ

(क) सिद्धार्थ कहाँ घूम रहा था?
(ख) हंस को क्या हुआ था?
(ग) सिद्धार्थ ने घायल हंस के लिए क्या किया?
(घ) देवदत्त ने क्या फैसला दिया?

इन वाक्यों को पूरा करो

चहचहाना राजमहल देवदत्त रंग-बिरंगे घायल

(क) बगीचे में ____________ फूल खिले थे।
(ख) पक्षियों का ____________ बंद हो गया।
(ग) हंस तीर लगने से ____________ हो गया था।
(घ) वह हंस को लेकर ____________ की ओर चल दिया।
(ङ) ____________ भी सिद्धार्थ के पीछे-पीछे चल दिया।

समझो और पढ़ो

द्	+	ध	=	द्ध	=	बुद्ध	सिद्धार्थ	शुद्ध
त्	+	त	=	त्त	=	पत्ता	देवदत्त	छत्ता
ट्	+	ट	=	ट्ट	=	पट्टी	मिट्टी	छुट्टी

लिखो

पक्षी रक्षा हंस हँस
सिद्धार्थ शुद्ध बुद्ध देवदत्त

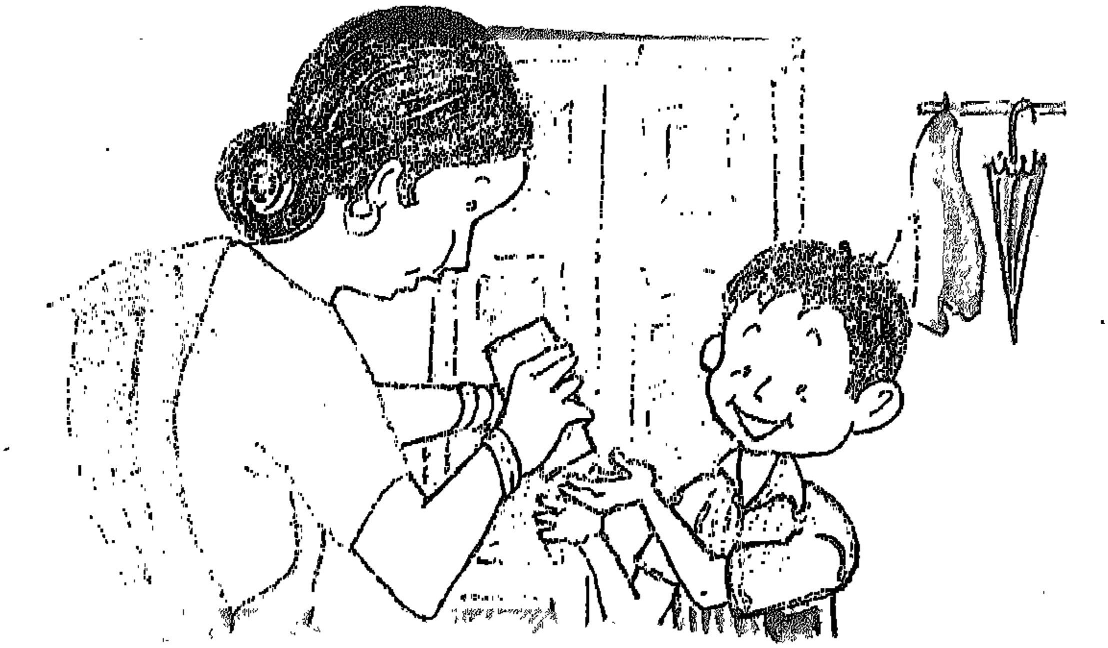
22. होली

पिचकारी श्याम टोली टेसू

विक्टर अबीर गुलाल

विनोद पाठशाला से आते ही बोला, "माँ मुझे कुछ पैसे दे दो। मैं बाज़ार से रंग और पिचकारी लाऊँगा।"

माँ बोली, "बेटा, अभी तो होली में दो दिन बाकी हैं। क्या अभी से होली खेलोगे?"



अध्यापक संकेत : बच्चे होली कैसे मनाते हैं - चर्चा करें। पिचकारी, श्याम, टेसू, विक्टर, अबीर, गुलाल - शब्दों का उच्चारण करवाएँ। टेसू के फूलों को उबालकर होली खेलने के लिए रंग बनाया जाता है, बताएँ। बातचीत द्वारा उभारें : होली मेल-मिलाप और भाईचारे का त्योहार है। बच्चे एक-दूसरे को गुलाल लगाएँ। होली से संबंधित - *प्रह्लाद और होलिका की कथा सुनाएँ।*

विनोद ने कहा, "माँ, श्याम कहता था, वह सब मित्रों को लेकर आएगा। मैं भी तैयार रहना चाहता हूँ। मुझे पैसे दे दो।"

माँ ने कहा, "मैंने टेसू के फूलों से रंग बनाया है। यह लो पैसे अबीर, गुलाल और पिचकारी ले आना।"



माँ ने विनोद को कुछ रुपए दिए। विनोद को रास्ते में एक मित्र मिला। वह भी रंग लेने जा रहा था। उसने रंग खरीदे। विनोद ने पिचकारी और गुलाल खरीदा।

होली का दिन आ गया। बालटी में टेसू का रंग देखकर विनोद खुश हुआ।

विनोद ने पिचकारी में रंग भरा और गीता पर छोड़ दिया। गीता का सारा कुरता पीला हो गया। वह रोने लगी। विनोद ने बहिन को प्यार किया और बोला, "गीता, रोओ मत। देखो, होली रंगों का त्योहार है। तुम भी मुझ पर रंग डालो। मैं बिलकुल बुरा नहीं मानूँगा।"



गीता ने बालटी से रंग लिया और विनोद पर डाल दिया। दोनों भाई-बहिन हँसने लगे। तभी श्याम, सुरजीत, विक्टर, नजमा और सलीम आ गए।

बच्चों ने खूब होली खेली। एक-दूसरे के मुँह पर अबीर-गुलाल लगाया। गीता ने भी सब पर रंग डाला। सभी बहुत खुश थे।

पड़ोस के लोग भी होली खेलने आए। एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाया और गले मिले। विनोद की माँ ने सबको मिठाई खिलाई।

बच्चे टोली बनाकर होली खेलने चल पड़े।

बताओ

(क) विनोद रंग और पिचकारी क्यों खरीदना चाहता था?
(ख) माँ ने रंग किससे बनाया?
(ग) विनोद के घर होली खेलने कौन-कौन आए?
(घ) पड़ोस के लोगों ने होली कैसे मनाई?

लिखो

तुम होली कैसे मनाते हो, पाँच वाक्य लिखो।

वाक्य बनाओ

मैं	एक-दूसरे के	रुपए दिए।
माँ ने	रंग और पिचकारी	गले मिले।
गीता ने	विनोद को	लाऊँगा।
सब	बालटी से	रंग लिया।

पढ़ो और लिखो

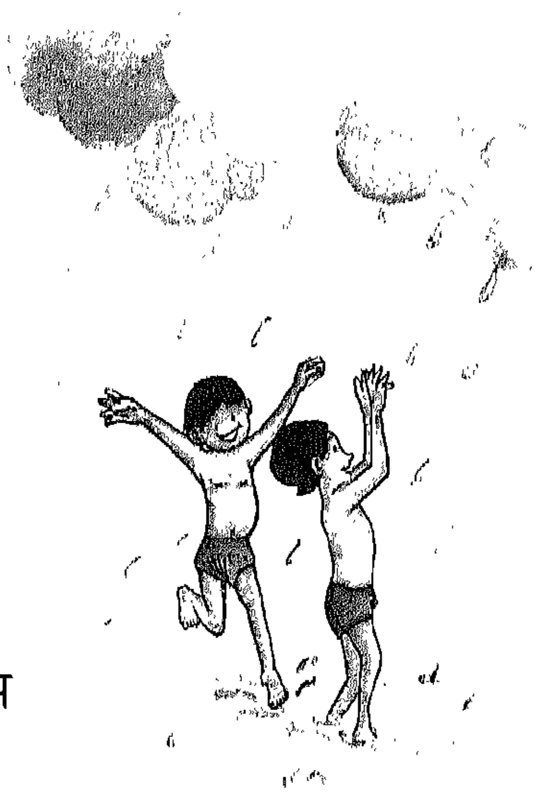
प्यार	प्यास	सप्ताह	समाप्त	श्याम	अवश्य
तुरंत	परंतु	संग	रंग	विक्टर	डाक्टर



23. ऋतुएँ



सूरज तपता धरती जलती
गरम हवा ज़ोरों से चलती
तन से बहुत पसीना बहता
हाथ सभी के पंखा रहता।

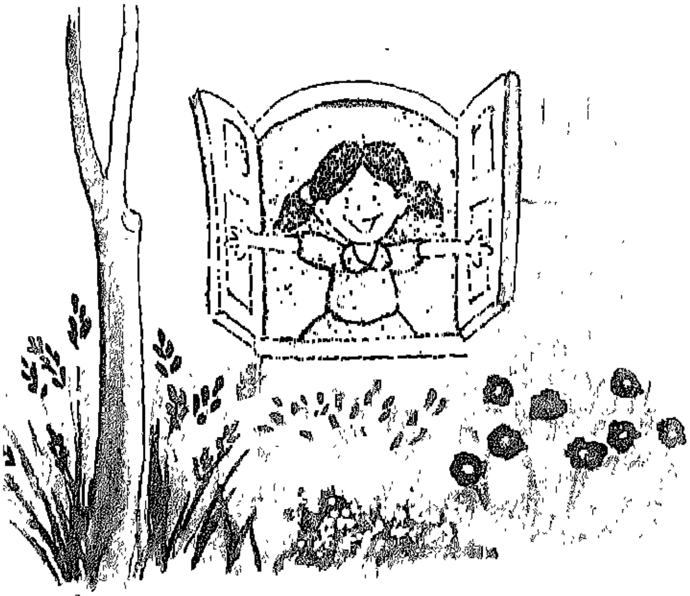


आ रे बादल, काले बादल
गरमी दूर भगा रे बादल
रिमझिम बूँदें बरसा बादल
झम-झम पानी बरसा बादल।

लो घनघोर घटाएँ छाईं
टप-टप टप-टप बूँदें आईं
बिजली चमक रही अब चम-चम
लगा बरसने पानी झम-झम।

अध्यापन संकेत : इस कविता में रिमझिम, झम-झम, टप-टप, चम-चम, रंग-रंग, रंग-रँगीली जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ और बार-बार पढ़वाकर यह स्पष्ट करें कि शब्दों को दोहराने से ये पंक्तियाँ सुनने में अधिक अच्छी लगती हैं। हमारे देश की तीन मुख्य ऋतुओं की चर्चा इस कविता में है - गरमी, बरसात और सरदी या जाड़ा। तीनों ऋतुओं के बारे में कक्षा के तीन समूह बनाकर बातचीत करें। प्रत्येक समूह अपने निश्चित मौसम की विशेषताएँ बताए और उसी के अनुसार चित्र बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करें। इन ऋतुओं से संबंधित कुछ अन्य कविताएँ सुनाएँ और याद करवाएँ।

लेकर अपने साथ दिवाली
सरदी आई बड़ी निराली
शाम सवेरे सरदी लगती
पर स्वेटर से है वह भगती।



सरदी जाती गरमी आती
रंग-रंग के फूल खिलाती
रंग रँगीली होली आती
सबके मन उमंग भर जाती।

रात और दिन हुए बराबर
सोते लोग निकलकर बाहर
सरदी बिलकुल नहीं सताती
सरदी जाती गरमी आती।



बताओ

(क) गरमी में क्या-क्या अच्छा लगता है?

(ख) बरसात में क्या-क्या होता है?

(ग) बरसात के बाद कौन-सी ऋतु आती है?

(घ) हमारे देश में कौन-कौन-सी ऋतुएँ होती हैं?

पढ़ो और लिखो

ऋषि ऋतु ऋण ऋचा

पढ़ो और समझो

तपना	=	बहुत गरम होना
तन	=	शरीर
घनघोर घटाएँ	=	घने बादल
उमंग	=	जोश